सत्यमेव जयते

अभिव्यक्ति

नराकास उपक्रम कोलकाता की अर्धवार्षिक हिंदी गृह पत्रिका, अंक-33, जनवरी 2026

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति उपक्रम कोलकाता

अध्यक्ष कार्यालय : कोल इण्डिया लिमिटेड, कोल भवन, न्यूटाउन, राजारहाट, कोलकाता

संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उपसमिति द्वारा नराकास उपक्रम कोलकाता का निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति

गृह मंत्रालय / भारत सरकार

निरीक्षण प्रमाण-पत्र

संसदीय राजभाषा समिति का गठन राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 4 के तहत वर्ष 1976 में किया गया। यह एक विशेषाधिकार प्राप्त समिति है। इस समिति में 30 संसद सदस्य हैं, 20 लोक सभा से और 10 राज्य सभा से। माननीय गृह मंत्री जी इस समिति के अध्यक्ष हैं। इस समिति का प्रमुख कार्य संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए हिंदी के प्रयोग में हुई प्रगति की पुनरीक्षण और समीक्षा कर सिफारिशें करते हुए अपनी रिपोर्ट माननीय राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत करना है।

इसी क्रम में संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप-समिति द्वारा दिनांक 20.09.2025 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) कोलकाता-(उपक्रम) अध्यक्ष निदेशक कार्मिक एवं औद्योगिक संबंध, कोल इंडिया लिमिटेड के अध्यक्ष तथा उनके कुछ सदस्य कार्यालयों के साथ विचार-विमर्श/निरीक्षण किया गया। समिति द्वारा आपकी अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा सदस्य कार्यालयों में राजभाषा नीति का प्रयोग व कार्यान्वयन कार्य उत्कृष्ट [redacted] पाया गया।

(भर्तृहरि महताब)
अध्यक्ष
आलेख एवं साक्ष्य उप-समिति

कार्यालय का पता: 11, तीन मूर्ति मार्ग, नई दिल्ली-110011, दूरभाष : 011-23012933/23411463
Email: aalekhsakshyacommittee@gmail.com

माननीय संसद सदस्य (लोकसभा) श्री भर्तृहारी महताब की अध्यक्षता में संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति ने दिनांक 20 सितम्बर, 2025 को नराकास उपक्रम कोलकाता तथा नगर के कुछ अन्य सदस्य कार्यालयों के राजभाषा संबंधी कार्यान्वयन का सफल निरीक्षण किया। समिति ने डॉ. विनय रंजन, निदेशक (मा.सं.), कोल इण्डिया लिमिटेड के नेतृत्व में संचालित नराकास उपक्रम कोलकाता द्वारा किये जा रहे उत्कृष्ट राजभाषा कार्यों की सराहना करते हुए उन्हें "उत्कृष्ट प्रमाण–पत्र" प्रदान किया।

दिनांक 15 सितम्बर 2025, गांधीनगर (गुजरात) में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा आयोजित पांचवे अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में नराकास उपक्रम कोलकाता को 'सर्वश्रेष्ठ' श्रेणी में नराकास प्रोत्साहन सम्मान प्रदान किया गया।

अध्यक्ष महोदय का संदेश

डॉ. विनय रंजन
अध्यक्ष, नराकास उपक्रम कोलकाता व
निदेशक (मानव संसाधन)
कोल इण्डिया लिमिटेड, कोलकाता

प्रिय पाठकगण,

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), कोलकाता की हिंदी पत्रिका **'अभिव्यक्ति'** के 33वें अंक के प्रकाशन के अवसर पर आप सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि इस अंक का केंद्रीय विषय **"वंदे मातरम् के 150 वर्ष"** है-एक ऐसा कालजयी उद्घोष, जिसने भारत की चेतना को स्वर, संवेदना और संकल्प प्रदान किया।

'वंदे मातरम्' केवल एक गीत नहीं, बल्कि राष्ट्र की आत्मा का घोष है। इसके शब्दों में मातृभूमि के प्रति अगाध प्रेम, त्याग की प्रेरणा और स्वतंत्रता के संघर्ष का अमिट इतिहास समाहित है। डेढ़ शताब्दी पूर्व रचित यह गीत आज भी हमें राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक गौरव और नागरिक कर्तव्य का स्मरण कराता है। वर्तमान समय में, जब वैश्विक परिवेश निरंतर परिवर्तनशील है, 'वंदे मातरम्' की प्रासंगिकता और भी सुदृढ़ होती है-यह हमें मूल्यों से जोड़ता है और राष्ट्रहित में कर्मठ बने रहने का संदेश देता है।

राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार, उसका सृजनात्मक उपयोग और कार्यालयीन कार्यों में उसकी सुदृढ़ उपस्थिति-ये सभी लक्ष्य **'अभिव्यक्ति'** के माध्यम से निरंतर साकार हो रहे हैं। यह पत्रिका न केवल विचारों का मंच है, बल्कि भाषा, संस्कृति और राष्ट्रबोध का सेतु भी है। संपादकीय टीम, लेखकों और सहयोगियों की प्रतिबद्धता इस अंक में विशेष रूप से दृष्टिगोचर होती है।

मुझे विश्वास है कि 'अभिव्यक्ति' का यह विशेषांक पाठकों को वैचारिक समृद्धि प्रदान करेगा, 'वंदे मातरम्' के ऐतिहासिक, साहित्यिक और समकालीन आयामों पर नई दृष्टि देगा तथा हिंदी के प्रति हमारी साझा जिम्मेदारी को और दृढ़ करेगा।

आप सभी के सतत सहयोग के लिए आभार सहित-

पत्रिका की निरंतर प्रगति और सफलता की कामना करता हूँ।

वि० रंजन

(डॉ. विनय रंजन)

उप निदेशक (कार्यान्वयन) का संदेश

डॉ. विचित्रसेन गुप्त

उप निदेशक (कार्यान्वयन)
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वी क्षेत्र), कोलकाता
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), कोलकाता द्वारा समिति की छःमाही पत्रिका **'अभिव्यक्ति'** के 33वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है । इस अंक का विषय **"वंदे मातरम् के 150 वर्ष"** रखा जाना अपने आप में अत्यंत सार्थक, विचारोत्तेजक एवं प्रेरणादायी है ।

वन्दे मातरम् केवल एक गीत नहीं, बल्कि भारत की आत्मा का स्वर है । आज से 150 वर्ष पूर्व जिस राष्ट्रीय चेतना का बीजारोपण इस कालजयी रचना के माध्यम से हुआ था, वह चेतना आज भी राष्ट्र को निरंतर ऊर्जा, दिशा और प्रेरणा प्रदान कर रही है । यह गीत हमें हमारी सांस्कृतिक जड़ों, ऐतिहासिक परंपराओं और राष्ट्रीय अस्मिता से जोड़ता है । वन्दे मातरम् का प्रत्येक शब्द मातृभूमि के प्रति श्रद्धा, समर्पण और दायित्व-बोध का स्मरण कराता है तथा नागरिकों में राष्ट्रहित के लिए कर्मशील रहने की भावना को सुदृढ़ करता है। समय, परिस्थितियाँ और पीढ़ियाँ बदलती रहीं, पर वन्दे मातरम् की प्रासंगिकता, उसकी भावनात्मक शक्ति और उसका राष्ट्रप्रेरक स्वर आज भी उतना ही जीवंत है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), कोलकाता, निरंतर अपने नवोन्मेषी क्रियाकलापों के माध्यम से हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं कार्यान्वयन में एक सराहनीय भूमिका निभा रही है । विभिन्न उपक्रमों को एक साझा मंच पर लाकर राजभाषा के प्रति जागरूकता, रुचि और उत्तरदायित्व की भावना विकसित करना समिति की विशिष्ट पहचान रही है । मैं नराकास (उपक्रम) से जुड़े सभी सदस्य कार्यालयों से अपेक्षा करता हूँ कि वे सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग एवं प्रसार के प्रति अपने संवैधानिक, संस्थागत एवं नैतिक दायित्वों का पूर्ण निष्ठा के साथ निर्वहन करते रहें ।

इस अवसर पर **'अभिव्यक्ति'** पत्रिका में अपनी सृजनात्मक रचनाओं, विचारों एवं लेखों के माध्यम से योगदान देने वाले सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं साधुवाद । आपकी रचनाएँ न केवल हिन्दी भाषा को समृद्ध करती हैं, बल्कि पाठकों को चिंतन, प्रेरणा और राष्ट्रभाव से भी अनुप्राणित करती हैं।

संपादक मंडल तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), कोलकाता को इस उत्कृष्ट, सारगर्भित एवं विषयानुकूल अंक के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ । मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'अभिव्यक्ति' का यह अंक पाठकों के मध्य व्यापक सराहना प्राप्त करेगा तथा राजभाषा हिन्दी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को और अधिक सुदृढ़ करेगा ।

'अभिव्यक्ति' के सभी सम्मानित पाठकों को अनंत एवं अशेष शुभकामनाएँ !

(डॉ. विचित्रसेन गुप्त)

सदस्य सचिव एवं प्रधान संपादक का संदेश

राजेश वी. नायर

सदस्य सचिव एवं प्रधान संपादक, नराकास उपक्रम कोलकाता व महाप्रबंधक (मानव संसाधन/राजभाषा) कोल इण्डिया लिमिटेड, कोलकाता

प्रिय पाठकगण,

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), कोलकाता की प्रतिष्ठित हिंदी पत्रिका **'अभिव्यक्ति'** के 33वें अंक के प्रकाशन के अवसर पर समस्त पाठकों एवं सहयोगियों को हार्दिक बधाई एवं शुभेच्छाएँ। यह हमारे लिए अत्यंत गर्व का विषय है कि यह विशेषांक **"वंदे मातरम् के 150 वर्ष"** जैसे गौरवशाली और प्रेरणास्पद विषय को समर्पित है-एक ऐसा कालजयी राष्ट्रगीत, जिसने डेढ़ सौ वर्षों से भी अधिक समय से भारत की राष्ट्रीय चेतना को स्वर और संबल प्रदान किया है।

'वंदे मातरम्' महज़ शब्दों की रचना नहीं, बल्कि मातृभूमि के प्रति अगाध निष्ठा, आत्मसम्मान और सांस्कृतिक चेतना का सजीव उद्घोष है। स्वतंत्रता संग्राम के निर्णायक क्षणों में इस गीत ने जन-जन में साहस, संकल्प और सामूहिक एकता की भावना को प्रज्वलित किया। समकालीन भारत, जो आत्मनिर्भरता, नवाचार और वैश्विक मंच पर सशक्त उपस्थिति की दिशा में अग्रसर है, वहाँ भी 'वंदे मातरम्' हमें अपनी ऐतिहासिक जड़ों, जीवन-मूल्यों और राष्ट्रीय उत्तरदायित्वों से निरंतर जोड़े रखता है।

'अभिव्यक्ति' का उद्देश्य केवल राजभाषा हिंदी का प्रसार नहीं, बल्कि उसके सृजनात्मक, वैचारिक और व्यवहारिक उपयोग को सशक्त बनाना भी है। यह पत्रिका विचार-विनिमय का मंच है, जहाँ भाषा के माध्यम से संस्कृति, इतिहास और समकालीन संदर्भों का सार्थक संवाद संभव होता है। इस विशेषांक में विद्वान लेखकों के आलेख 'वंदे मातरम्' के ऐतिहासिक, साहित्यिक और सामाजिक आयामों को गहराई से उद्घाटित करते हैं।

मैं संपादकीय मंडल, सभी लेखकों, समीक्षकों और सहयोगियों का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके समर्पण और परिश्रम से यह विशेषांक साकार हुआ है। मुझे विश्वास है कि 'अभिव्यक्ति' का यह अंक पाठकों को प्रेरित करेगा, राष्ट्रीय चेतना को सुदृढ़ करेगा और राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी साझा प्रतिबद्धता को और मजबूत बनाएगा।

सदैव की भाँति आपके रचनात्मक सहयोग और मार्गदर्शन की अपेक्षा के साथ- पत्रिका की निरंतर उन्नति एवं सफलता की मंगलकामनाएँ।

(राजेश वी. नायर)

संपादकीय

श्रीमती मधुमिता गुहा
वरिष्ठ पर्यवेक्षक (राजभाषा)
एनएचपीसी लिमिटेड

प्रिय पाठकगण,

'अभिव्यक्ति' का 33वाँ अंक आपके हाथों में है-एक ऐसा अंक जो केवल पत्रिका का क्रम नहीं, बल्कि राष्ट्र की चेतना का उत्सव है। इस विशेषांक का विषय **"वंदे मातरम् के 150 वर्ष"** है, और यह विषय अपने आप में इतिहास, साहित्य और संस्कृति का जीवंत संगम है।

डेढ़ शताब्दी पूर्व रचित वंदे मातरम् ने स्वतंत्रता संग्राम के कठिन दौर में जन-जन को साहस और संकल्प दिया। यह उद्घोष केवल गीत नहीं, बल्कि मातृभूमि के प्रति अगाध निष्ठा और त्याग का प्रतीक है। आज जब भारत आत्मनिर्भरता, नवाचार और वैश्विक नेतृत्व की ओर अग्रसर है, तब भी यह गीत हमें हमारी जड़ों, हमारे मूल्यों और हमारे राष्ट्रीय उत्तरदायित्वों से जोड़ता है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), कोलकाता की यह पत्रिका हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार का माध्यम ही नहीं, बल्कि विचारों, संस्कृति और राष्ट्रीय चेतना का सेतु भी है। इस अंक में प्रस्तुत लेख, कविताएँ और आलेख वंदे मातरम् के ऐतिहासिक, साहित्यिक और सामाजिक आयामों को उजागर करते हुए पाठकों को नई दृष्टि प्रदान करेंगे।

इस विशेषांक के माध्यम से हम सभी पाठकों से अपेक्षा करते हैं कि वे हिंदी भाषा के संवर्धन और राष्ट्र की सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में अपनी सक्रिय भूमिका निभाएँ। वंदे मातरम् की गूँज हमें सदैव यह स्मरण कराती रहे कि राष्ट्रहित में कर्मठ बने रहना ही हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। संपादकीय मंडल, लेखकों और सहयोगियों का समर्पण इस अंक में स्पष्ट रूप से झलकता है। हम सभी का प्रयास है कि **'अभिव्यक्ति'** एक ऐसा मंच बने जहाँ भाषा और संस्कृति के माध्यम से राष्ट्र की आत्मा को अभिव्यक्त किया जा सके।

आपके सतत सहयोग और मार्गदर्शन के लिए हार्दिक आभार। आइए, हम सब मिलकर हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति के संवर्धन में अपनी भूमिका निभाएँ और वंदे मातरम् की गूँज को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाएँ।

मधुमिता

(मधुमिता गुहा)

संपादक मंडल

श्री राजेश वी. नायर
सदस्य सचिव एवं प्रधान संपादक, नराकास (उपक्रम)
कोलकाता व महाप्रबंधक (मानव संसाधन/राजभाषा)
कोल इण्डिया लिमिटेड, कोलकाता

श्री राजेश साव
सदस्य सह सचिव, नराकास (उपक्रम)
प्रबंधक (रा.भा), कोल इण्डिया लिमिटेड

श्री रमेश साव
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कर्मचारी राज्य बीमा निगम लिमिटेड

श्री प्रियांशु प्रकाश
उप प्रबंधक (राजभाषा)
कोल इण्डिया लिमिटेड

श्री सौरभ मुस्कान
वरिष्ठ प्रबन्धक (राजभाषा एवं मानव संसाधन)
ब्रिज एण्ड रूफ कंपनी (इंडिया) लिमिटेड

श्री दिनेश कुमार शर्मा
वरिष्ठ हिंदीअधिकारी
इंडियन ऑइल कॉर्पोरेशन लिमिटेड

श्री वरुण कुमार शर्मा
अभियंता एवं हिंदीअधिकारी
बीएचईएल, कोलकाता

श्रीमती मधुमिता गुहा
वरिष्ठ पर्यवेक्षक (राजभाषा)
एनएचपीसी लिमिटेड

प्रकाशन सम्पर्क
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति उपक्रम कोलकाता
अध्यक्ष कार्यालय : कोल इण्डिया लिमिटेड, कोल भवन, एक्शन एरिया-1 ए, न्यूटाउन, राजारहाट, कोलकाता-700156

अनुक्रमणिका

शुभ-संदेश

1	**डॉ. विनय रंजन,** अध्यक्ष, नराकास उपक्रम कोलकाता व निदेशक (मानव संसाधन), कोल इण्डिया लिमिटेड, कोलकाता	3
2	**डॉ. विचित्रसेन गुप्त**, उप निदेशक (कार्यान्वयन) क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वी क्षेत्र), कोलकाता, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय	4
3	**श्री राजेश वी. नायर**, सदस्य सचिव एवं प्रधान संपादक, नराकास उपक्रम, कोलकाता व महाप्रबंधक (मा.सं/रा.भा) कोल इण्डिया लिमिटेड, कोलकाता	5
4	**संपादकीय : श्रीमती मधुमिता गुहा**, वरिष्ठ पर्यवेक्षक (राजभाषा), एनएचपीसी	6

गद्य-लेखन

5	नराकास उपक्रम कोलकाता की वर्ष 2025-26 की पहली अर्द्धवार्षिक समीक्षा बैठक - अगस्त 2025		9
6	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति उपक्रम कोलकाता के तत्वावधान में सितम्बर 2025 से जनवरी 2026 के दौरान आयोजित कार्यक्रम / गतिविधियाँ		13
7	वंदे मातरम् के 150 वर्ष : भारतीय राष्ट्रवाद की अमर हुंकार और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का गीत	कुनाल वैद्य	17
8	स्वाधीनता संग्राम में वंदे मातरम् गीत और हिन्दी भाषा का योगदान	रमेश साव	19
9	वंदे मातरम् : भारत के राष्ट्रीय अभिव्यक्ति के 150 वर्ष	प्रियांशु प्रकाश	21
10	वंदे मातरम् के विविध संस्करण	राकेश देवगड़े	24
11	राजभाषा हिन्दी और वंदे मातरम् : राष्ट्रीय एकता के दो सशक्त स्तम्भ	कामिनी गुप्ता	27
12	वंदे मातरम् के 150 वर्ष	मधुसूदन मुर्मु	29
13	राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम्' के 150 वर्ष	तरुण दत्ता	31
14	वंदे मातरम् : 150 वर्षों की अमर यात्रा	विशाल	33
15	वंदे मातरम् के 150 वर्ष : भारत की चेतना का कालजयी उद्घोष	श्वेतांशु	35
16	राजभाषा हिन्दी के प्रसार में कृतिम बुद्धिमता (एआई) की भूमिका	राजेंद्र कुमार नायक	36
17	विकसित भारत में राजभाषा की भूमिका	बिनय कुमार शुक्ल	38
18	बंकिम चन्द्र के साहित्य में राष्ट्रवाद और स्त्री चेतना	मधुमिता गुहा	40
19	विकसित भारत में राजभाषा की भूमिका	रीना पाण्डेय	42

काव्यांजलि

20	महुआ का फूल	राजेश साव	32
21	मेरा गाँव	राजेश साव	44
22	पिता के बिना	राजीव शर्मा	45
23	आदिवासी जब जगने लगा	विजय सिंह	46
24	वंदे मातरम् के 150 वर्ष	कुणाल कुमार	47
25	माता का आह्वान	जयश्री बंसल	49
26	वंदे मातरम् - शताब्दी का शंखनाद	वरुण कुमार शर्मा	50

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं को सुनने के लिए QR कोड को अपने मोबाइल से स्कैन करें। यह QR कोड रचनाओं के हर पृष्ठ पर दिया गया है। बाई ओर ऊपर दिये गए QR कोड को स्कैन करके आप अनुक्रम में दिये गए सभी रचनाओं को सुन सकते है। नीचे अब तक प्रकाशित पत्रिकाएँ दिये गए है, आप उसे पीडीएफ़ या फ्लिप बुक में क्लिक करके देख सकते हैं।

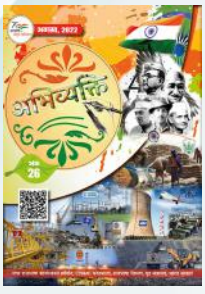

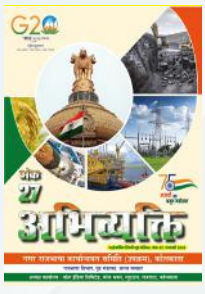

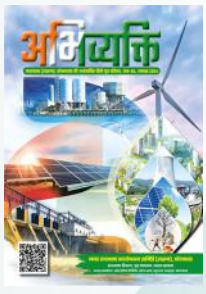

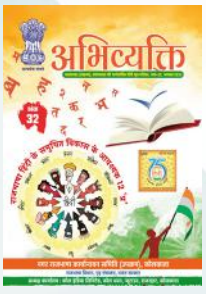

नोट : पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता एवं उनमें व्यक्त विचारों के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी है। अतः पत्रिका में व्यक्त विचारों के लिए संपादक, प्रबंधकीय मंडल तथा नराकास प्रबंधन किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं है। निःशुल्क व आंतरिक वितरण हेतु मुद्रित व प्रकाशित।

नराकास उपक्रम कोलकाता की वर्ष 2025-26 की पहली अर्द्धवार्षिक समीक्षा बैठक - अगस्त 2025

राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा प्रदत्त कैलेण्डर के अनुसार नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति उपक्रम कोलकाता की वर्ष 2025-26 की पहली समीक्षा बैठक दिनांक अगस्त, 2025 को होटल ताज न्यूटाउन, सिटी सेंटर-II के प्रांगण में आयोजित की गई। समीक्षा बैठक की अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष डॉ. विनय रंजन, निदेशक (मानव संसाधन), कोल इंडिया लिमिटेड ने की।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, पूर्वी क्षेत्र, कोलकाता से डॉ. विचित्रसेन गुप्त, उप निदेशक, श्री ओम प्रकाश प्रसाद, अनुसंधान अधिकारी, हिंदीशिक्षण योजना से श्रीमती कवितांजली मोहंती, सहायक निदेशक (पूर्व), श्री जीतेन्द्र प्रसाद, उप निदेशक (टंकण), श्री लखन कुमार सिंह, सहा. निदेशक, हिंदी सलाहकार समिति, वित्त मंत्रालय के सदस्य श्री नवीन प्रजापति, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो से श्री ध्रुव नारायण आजाद, सहायक निदेशक (पूर्व), श्री ए के श्रीवास्तव, वरिष्ठ सलाहकार, आईआईटी, खड़गपुर से डॉ. राजीव कुमार रावत, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी बैठक में उपस्थित रहे ।

बैठक में समिति के 63 सदस्य कार्यालयों से कार्यालय प्रधान सहित कुल 190 प्रतिभागियों की उपस्थिति दर्ज की गई। कार्यक्रम की शुरुआत राष्ट्रगान एवं दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। तत्पश्चात श्री राजेश वी नायर, महाप्रबंधक (मा.सं./नीति/राजभाषा) एवं सदस्य सचिव ने सभी अतिथियों का स्वागत किया ।

कार्यक्रम के दौरान नराकास की पत्रिका "अभिव्यक्ति" के 32वें अंक का विमोचन किया गया। समिति के कोषाध्यक्ष श्री गजानन दूबे, उप प्रबंधक (वित्त), सीआईएल ने 2024-25 में सदस्य कार्यालयों द्वारा प्राप्त अंशदान/सहयोग एवं व्यय के संबंध में वार्षिक लेखा रिपोर्ट प्रस्तुत किया। वर्ष 2024-25 में सदस्य कार्यालयों द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में संपादित किये गये कार्यों से संबंधित प्राप्त रिपोर्ट के आधार पर सदस्य कार्यालयों को अलग-अलग श्रेणियों (प्रधान, क्षेत्रीय तथा स्थानीय कार्यालय) में पुरस्कार प्रदान किये गये। पुरस्कार स्वरुप शील्ड एवं प्रशस्ति फलक प्रदान किये गये। पत्रिका प्रकाशन हेतु भी कार्यालयों को पुरस्कृत किये गये। नराकास के तत्वावधान में आयोजित निबंध लेखन, राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, लघु नाटक प्रतियोगिता, आशुभाषण प्रतियोगिता, पत्र/टिप्पण लेखन प्रतियोगिता, गीत गायन प्रतियोगिता, चित्राभिव्यक्ति प्रतियोगिता, तथा शार्ट फिल्म निर्माण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। हिंदी भाषी एवं हिंदतर भाषी दो वर्गों में मंचासीन गणमान्य व्यक्तियों के कर कमलों द्वारा विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

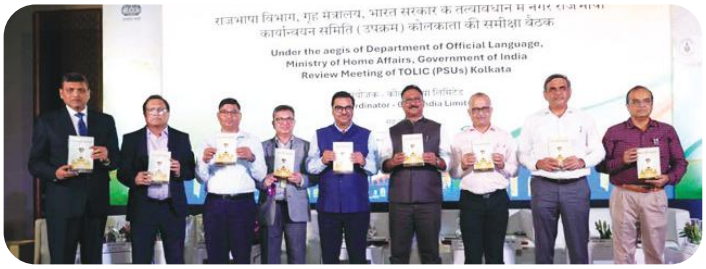

अनुवाद प्रशिक्षण संबंधी जानकारी – केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, कोलकाता के वरिष्ठ सलाहकार श्री ए. के. श्रीवास्तव ने अपने संबोधन में कहा कि राजभाषा क्रियान्वयन के लिए अनुवाद एक महत्वपूर्ण अंग है, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो अनुवाद संबंधी प्रशिक्षण प्रदान कर हिंदी क्रियान्वयन का बढ़ावा दे रही है। अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम दो प्रकार से चलाया जाता है। प्रारंभिक अनुवाद प्रशिक्षण जो पूर्णकालिक 30 कार्यदिवस का होता है और दूसरा पुनश्चर्या पाठ्यक्रम जो 5 दिनों का होता है और कार्यालयों में जाकर आयोजित किया जाता है। उन्होंने बैठक में उपस्थित सभी पदाधिकारियों से अनुवाद प्रशिक्षण हेतु कार्मिकों के नामांकन हेतु अनुरोध किया।

हिंदीप्रशिक्षण संबंधी जानकारी – केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग की सहायक निदेशक श्रीमती कवितांजली मोहंती ने हिंदीतर प्रदेश में हिंदी भाषा प्रशिक्षण के महत्व को रेखांकित किया और अवगत कराया कि हिंदी प्रशिक्षण का कार्य सभी कार्यालयों को यथाशीघ्र पूरा करना है। उन्होंने हिंदी शिक्षण योजना के तहत चलाए जा रहे प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ व पारंगत की कक्षाओं के संबंध में विस्तार से जानकारी प्रदान की। इसके साथ ही श्री जीतेन्द्र प्रसाद, उपनिदेशक (टंकण) ने टंकण से संबंधी प्रशिक्षण की जानकारी प्रदान की।

आमंत्रित वक्ताओं का सम्बोधन– श्री नवीन प्रजापति, सदस्य, हिंदी सलाहकार समिति, वित्त मंत्रालय ने "राजभाषा कार्मिकों के कार्यक्षेत्र तथा नराकास की भूमिका'' विषय पर उपस्थित कार्मिकों को संबोधित किया। उन्होंने विस्तार से अनुभवों को साझा करते हुए कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन से जुड़ी समस्याओं एवं समाधान को सरल एवं सहज तरीके से बतलाया, और राजभाषा को एक नई उँचाई तक ले जाने के लिए सभी को प्रेरित किया। दूसरे विशिष्ट वक्ता डॉ. राजीव कुमार रावत, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, आईआईटी, खड़गपुर ने "कंप्यूटर पर हिंदी संबंधी आई-टी टूल्स का अनुप्रयोग'' विषय पर लोगों से तकनीक के नए आयाम साझा किए।

सदस्य कार्यालयों से प्राप्त रिपोर्ट की समीक्षा– डॉ. विचित्रसेन गुप्त, उप निदेशक, क्षे. कार्या. कार्यालय(पूर्व), रा.भा. विभाग, गृह मंत्रा., भारत सरकार ने प्राप्त रिपोर्टों की समीक्षा की। उन्होंने अपने वक्तव्य में कोलकाता नराकास की प्रशंसा करते हुए कहा कि हम सबका लक्ष्य है, राजभाषा कार्यान्वयन को तीव्र गति प्रदान करना और इस लक्ष्य को हम जरूर प्राप्त करेंगे। चूंकि यह साझा मंच है और इस मंच से मैं आग्रह करूंगा कि प्रत्येक कार्यालय जो राजभाषा क्षेत्र में कोई नवोन्मेषी कार्य करता है तो उस कार्य को पीपीटी के माध्यम से इस मंच से प्रस्तुत किया जाए, जिससे कि हमें समावेशी एवं विकास के लिए एक नया स्वरूप मिले तथा इस साझा मंच का लाभ हम सब लें। साथ ही आप सभी कार्यालय को एक मंच पर लाने के लिए कोल इंडिया लिमिटेड जो भूमिका अदा कर रही है, लगभग 90% कार्यालय के कार्यालय अध्यक्ष बैठक में उपस्थित होते हैं, वह अद्वितीय है। इससे सभी नराकासों को सीखना चाहिए। उन्होंने कहा राजभाषा विभाग के जो पैमाने हैं उसे यह नराकास छूता हुआ दिखाई देता है और इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं क्योंकि नराकास केवल एक कार्यालय का नहीं बल्कि समस्त कार्यालय के संयुक्त प्रयास से आगे बढ़ती है। उन्होंने कहा कि जो कार्यालय तिमाही प्रगति रिपोर्ट समय पर नहीं भरते है तो उनका मूल्यांकन नहीं हो पता है। मैं सभी उपक्रमों के प्रमुखों एवं राजभाषा अधिकारियों को यह कहना चाहूंगा कि जरूर से जरूर तिमाही प्रगति रिपोर्ट आप जमा करें और जो बैठक नराकास की होती है उसमें सभी कार्यालय प्रमुखों की उपस्थिति अनिवार्य है। संसदीय राजभाषा समिति सदैव यही इस विषय पर चिंता जाहिर करती है। कुछ कार्यालय रिपोर्ट भेजने में देर करते हैं तो आप सभी से अनुरोध करूंगा कि आप अपनी रिपोर्टें तय समय में भेज दें। पत्रिका प्रकाशन बहुत से कार्यालय नहीं कर रहे हैं पत्रिका प्रकाशन जरूर करें ऑफलाइन माध्यम से हो या ऑनलाइन। कुछ कार्यालय में यह देखने में आया है कि जो दस्तावेज धारा 3(3) में समाहित है उसको भी मूल पत्राचार में जोड़ देते हैं। हिंदी में केवल हस्ताक्षर होने से ही पत्र का स्वरूप हिंदी नहीं होता, पत्र का पूरा कलेवर हिंदी में हो तभी पूरा पत्र हिंदी में माना जाएगा। जिन कार्यालयों की उपस्थिति नहीं है उन्होंने सदस्य सचिव से अनुरोध किया कि उनको पत्र लिखकर उनसे अनुपस्थिति का कारण पूछा जाए।

रिपोर्टों की समीक्षात्मक प्रस्तुति के अनुसार निम्नानुसार कार्यालयों द्वारा कार्रवाई अपेक्षित है :

- बीबीजे कंस्ट्रक्शन कंपनी लिमिटेड, हुगली कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड, बीएसएनएल पं. बं. परिमंडल, नाल्को द्वारा धारा 3(3) के संबंध में सुधारात्मक कार्रवाई करते हुए सभी इस मद में सभी दस्तावेज द्विभाषी रूप से जारी किए जाने हैं।
- नियम 5 के अनुपालन के संबंध में बामर लारी एंड कंपनी लिमिटेड, हुगली कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड, एनपीसीसी, सेल-विपणन कार्यालय द्वारा हिंदी में प्राप्त सभी पत्रों के उत्तर हिंदी में दिए जाने हैं।
- पत्राचार के संबंध में प्रधान कार्यालय श्रेणी में - बीबीजे कंस्ट्रक्शन कंपनी लिमिटेड (क-50.7%, ग-58.62%,) हुगली कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड ग-21.43%,), क्षेत्रीय कार्यालय श्रेणी में - एनपीसीसी (क-52.7% ग-51.5%), बीईएमएल (क - क्षेत्र- 58%), राइट्स परियोजना (क - क्षेत्र- 56.7%, ख क्षेत्र – 58.9%, ग क्षेत्र- 59.4%), राइट्स निरीक्षण (क - क्षेत्र- 57.5%, ख क्षेत्र – 50%, ग क्षेत्र- 56.8%), भारतीय नौवहन निगम लि. (ग क्षेत्र- 58.1%), खादी ग्रामाद्योग आयोग (ख क्षेत्र – 56%, ग क्षेत्र- 55%), एफसीआई - आंचलिक कार्यालय (ख क्षेत्र – 36.3%, ग क्षेत्र- 53.6%),
- एनएचएआई - (क - क्षेत्र- 56%, ग क्षेत्र- 52),बीएसएनएल – कोलकाता टेलीफोन्स (क - क्षेत्र- 55.3%, ग क्षेत्र- 56.1%) तथा स्थानीय कार्यालय श्रेणी में डेडिकेटेड फ्रेड कोरिडोर (क - 57%) द्वारा पत्राचार का अपेक्षित लक्ष्य प्राप्त किया जाना है।
- बीबीजे कंस्ट्रक्शन कंपनी लिमिटेड (17%) तथा हुगली कोचीन

शिपयार्ड लिमिटेड - 30%,) द्वारा हिंदी में टिप्पणियां लेखन के संबंध में न्यूनतम 35% का लक्ष्य प्राप्त किया जाना है।

- हुगली कोचीन शिपयार्ड लि., डेडिकेटेड फ्रेड कोरिडोर, एनएचएआई तथा इंजीनियर्स इण्डिया लि. द्वारा जून-2025 को समाप्त तिमाही में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाना है।
- डेडिकेटेड फ्रेड कोरिडोर द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक किया जाना है।

उन्होंने आगे कहा कि राजभाषा अधिकारियों को भी शीर्षस्थ प्रबंधन का साथ और दिशा निर्देश मिलना चाहिए। राजभाषा हिंदी का प्रयोग कुंठा की वजह से नहीं किया जाता है नकारात्मक सोच की वजह से हिंदी में कार्य करने में अवरोध आता है। मंच के द्वारा उन्होंने शीर्षस्थ प्रबंधन से अनुरोध करते हुए कहा कि हमें हिंदी में कार्य रुचि एवं आत्मीयता के साथ करना होगा । ऐसे उदाहरण इस मंच से प्रस्तुत किए जाएं कि जो कार्य हिंदी में नहीं किए जाते थे लेकिन अब हमारे द्वारा किए जा रहे हैं। हिंदी प्रशिक्षण का डेटाबेस तैयार करना होगा। प्रशिक्षण लेने के बाद भी अधिकारी हिंदी में कार्य नहीं कर रहे हैं, कार्यालय प्रमुख ही इसके भी उत्तरदायी हैं। अंत में श्री गुप्त जी ने सभी पुरस्कृत कार्यालयों को बधाई देते हुए शुभकामना दी और साथ ही आगामी राजभाषा सम्मेलन तथा अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन में नराकास से 500 से अधिक व्यक्तियों द्वारा सहभागिता करने हेतु आग्रह किया।

विशिष्ट व्यक्तियों का सम्बोधन-

श्री नवरत्न गुप्ता, निदेशक (वित्त), ब्रिज एंड रूफ कंपनी (इंडिया) लि. ने कहा कि यह हर्ष का विषय है कि समिति के सभी सदस्य कार्यालय राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सक्रिय एवं रचनात्मक योगदान दे रहे हैं। बीते छः माह की उपलब्धियों की समीक्षा से हमें आगामी कार्ययोजना तैयार करने की दिशा मिलेगी और एक-दूसरे के अनुभवों से सीखने का अवसर प्राप्त होगा। राजभाषा हिंदी का प्रयोग केवल हमारी संवैधानिक जिम्मेदारी ही नहीं, बल्कि शासन की नीतियों एवं कार्यक्रमों को जन-जन तक सहज रूप से पहुँचाने का मजबूत माध्यम भी है। हिंदी में कार्य करने से कर्मचारियों की दक्षता और क्षमता में वृद्धि होती है। माननीय प्रधानमंत्री जी ने भी हिंदी को आत्मनिर्भर भारत की कुंजी बताते हुए इसके महत्व पर बल दिया है। आज हिंदी राष्ट्रीय ही नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय मंच पर भी प्रतिष्ठित हो रही है। तकनीकी क्षेत्र-विशेषकर कंप्यूटर, मोबाइल अनुप्रयोग और e-Governance में हिंदी का प्रयोग तेजी से बढ़ रहा है। इस दिशा में राजभाषा अनुवाद Software 'कंठस्थ' तथा आधुनिक AI Tools के उपयोग से हिंदी लेखन और भी सरल एवं सहज हो गया है। हमारे कार्यालयों में ई-ऑफिस की द्विभाषी प्रणाली, हिंदी में टिप्पण, पत्राचार एवं तकनीकी लेख में उल्लेखनीय प्रगति हुई है, जिससे न केवल पारदर्शिता बढ़ी है, बल्कि जनसामान्य की सहभागिता भी सुदृढ़ हुई है।

श्री संजीव कुमार सिन्हा, निदेशक (प्रचालन), हिंदुस्तान कॉपर लि. ने अपने संबोधन में कहा कि खनन केवल एक उद्योग ही नहीं – बल्कि यह राष्ट्र निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए माइनिंग उद्योग का एक अलग ही स्थान है। हिंदीबहुत ही सशक्त, सुग्राह्य एवं सक्षम भाषाओं में से एक है। हिंदीमें काम करना आज के संचार प्रौद्योगिकी (Technology) के युग में कठिन नहीं रह गया है और हम सभी इसका समुचित प्रयोग सुनिश्चित कर संघ की भाषा को सुदृढ़ करें। पुरस्कार किसी भी उपक्रम के लिए उत्साहवर्धक होता है। इससे सदस्य कार्यालयों में आपसी प्रतिस्पर्धा आती है जिसका परिणाम सकारात्मक निकलता है। आशा करता हूँ कि आनेवाले समय में आज के पुरस्कार विजेता अपने-अपने कार्यालयीन कार्य राजभाषा में ही संपादित करेंगे और अपने कार्यालय को गौरवान्वित करेंगे। आइये, हम सब मिलकर इस नराकास को सशक्त एवं नवोन्मेषी रुप देकर एक नई पहचान बनायें।

श्री कुमार घोष चौधुरी, प्रबंध निदेशक, बंगाल केमिकल्स एण्ड फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड ने अपने वक्तव्य में उल्लेख किया कि बंगाल केमिकल्स एण्ड फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड (बीसीपीएल) देश की पहली दवा कंपनी है, जो लोगों को सस्ती और अच्छी दवाइयाँ उपलब्ध कराकर समाज की सेवा कर रही है। इसी संदर्भ बीसीपीएल हिंदी के प्रचार-प्रसार में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। नराकास का उद्देश्य केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों, उपक्रमों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना तथा राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन में आने वाली कठिनाइयों का समाधान करने हेतु एक साझा मंच उपलब्ध कराना है। यही हमारे सामूहिक प्रयासों की दिशा एवं लक्ष्य होना चाहिए।

श्री राकेश छीलर, बीबीजे कंस्ट्रक्शन लिमिटेड ने कहा कि हम भारी उद्योग मंत्रालय के राजभाषा नीति और मंत्रालय के निर्देशों के प्रति पूर्णतः प्रतिबद्ध हैं। इसी के साथ हमें उपस्थित सभी सम्मानित सदस्यों के साथ इस बात पर विचार विमर्श करने का मौका भी मिला कि हम अपने संगठन में हिंदी के प्रयोग को किस प्रकार बेहतर बना सकते हैं।

श्री अधीप नाथ पाल चौधरी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, बामर लॉरी कंपनी लिमिटेड ने कहा कि राजभाषा के विकास से विश्व में हमारा स्वाभिमान बना रहेगा और हमारे समाज तथा देश की भी उन्नित होगी । केंद्र सरकार के उपक्रम होने के नाते हमारा यह उत्तरदायित्व है कि राजभाषा विभाग द्वारा दिए गए अनुदेशों का पूर्ण रूप से अनुपालन किया जाए। विभिन्न कार्यशाला एवं राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन भी होता रहे जिससे राजभाषा कार्यान्वयन का उद्देश्य पूर्ण हों। आज का युग डिजिटल युग है। विज्ञान एवं तकनीक ने हर पहलू को प्रभावित किया है। हम हिंदी भाषा को भी तकनीकी साधनों के साथ जोड़ें। अनुवाद सेवाओं में एआई आधारित सॉफ्टवेयर का उपयोग अब आम हो गया है। कंठस्थ 2.0 जैसे प्लेटफार्म हिंदी में अनुवाद की सुविधा प्रदान करते हैं। ऐसे तकनीक आधारित टूल्स को अपनाना चाहिए, जो हमारे कर्मचारियों को हिंदी में काम करने में आसानी प्रदान करें। उन्होंने मंच से नराकास के तत्वावधान में यात्रा-वृत्तांत प्रतियोगिता आयोजित करने की भी घोषणा किये।

श्री अनंत मोहन सिंह, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक एंड्रयू यूल एंड कंपनी लिमिटेड, मैं इस शुभ कार्यक्रम का हिस्सा बनने पर गर्व महसुस

करता हूँ एवं साथ ही साथ आप लोगों का आभार भी प्रकट करता हूँ। हमारी कम्पनी में गृह मंत्रालय, भारत सरकार, राजभाषा विभाग के नियमानुसार सभी नियमों का अनुपालन सही ढंग से होता है। भारत सरकार की राजभाषा नीति के क्रियान्वयन के उद्देश्य से एवाईसिएल अपने सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित विभिन्न लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एवाईसिएल नियमित रूप से विभिन्न हिंदी गतिविधियों और प्रतियोगिताओं का आयोजन एवं विजेताओं को पुरस्कृत करता है । इसके अलावा दैनन्दिन सरकारी कामकाज में हिंदीको अपनाने हेतु कर्मचारियों एवं अधिकारियों को पुरस्कृत भी किया जाता है। मैं इस अति सुन्दर कार्यक्रम के आयोजन के लिए कोल इंडिया एवं नराकास, कोलकाता की पूरी टीम को बधाई देता हुँ।

श्री रथेन्द्र रमण, अध्यक्ष, श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट, कोलकाता, आज की यह बैठक न केवल राजभाषा के प्रचार-प्रसार की दिशा में एक महत्वपूर्ण पड़ाव है, अपितु यह हमारी सामूहिक प्रतिबद्धता और प्रयासों का प्रतीक भी है। कोल इंडिया की अध्यक्षता में नराकास (उपक्रम) द्वारा किए गए कार्यों की मैं विशेष सराहना करता हूँ। पत्रिका 'अभिव्यक्ति' का प्रकाशन इस दिशा में एक और उल्लेखनीय उपलब्धि है। इसकी आकर्षक प्रस्तुति, सूचनापरक सामग्री एवं नवीन गतिविधियाँ इसे एक प्रेरणास्रोत बनाती हैं। इससे जुड़े सभी सदस्यों को मैं हार्दिक बधाई देता हूँ। श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट द्वारा की जा रही राजभाषा गतिविधियाँ विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं। शीर्ष बैठकों की कार्यवाही हिंदीमें करना, द्विभाषी कोड एवं विनियमों का निर्माण, सभी कंप्यूटरों पर यूनिकोड प्रणाली की स्थापना, द्विभाषी वेबसाइट निर्माण, कार्यशालाओं के माध्यम से प्रशिक्षण, ई-ऑफिस में हिंदीटिप्पणियों का प्रचलन, हिंदीई-मेल का बढ़ता प्रयोग तथा डिजिटल डिस्प्ले बोर्ड पर हिंदीसाहित्य का प्रदर्शन-ये सभी पहलें हिंदीको कार्य संस्कृति में आत्मसात करने की दिशा में मील का पत्थर हैं। ऐसी बैठकें राजभाषा की प्रगति, विचार-विनिमय और नवाचार के लिए अत्यंत लाभकारी हैं। कोल इंडिया तथा सभी सहयोगी संस्थाओं को मैं धन्यवाद एवं साधुवाद अर्पित करता हूँ, जिनके सतत प्रयासों से हिंदीकी गरिमा और प्रभाव निरंतर बढ़ रहा है।

अध्यक्षीय संबोधन– नराकास उपक्रम कोलकाता के अध्यक्ष श्री विनय रंजन, निदेशक (मानव संसाधन), कोल इंडिया लिमिटेड ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में मंचासीन सभी कार्यालय प्रमुखों का अभिनंदन करते हुए कहा कि आज जब हम नराकास उपक्रम, कोलकाता की इस गरिमामयी बैठक में एकत्रित हुए हैं, तो यह केवल एक औपचारिक आयोजन मात्र नहीं है, बल्कि हमारी भाषा, संस्कृति और राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक है। राजभाषा हिंदी न केवल हमारी पहचान है, बल्कि यह प्रशासनिक दक्षता, भारतीय संस्कृति की अभिव्यक्ति और जनसंपर्क की एक सशक्त कड़ी भी है। ऐसे में जब हम राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की बात करते हैं, तो हम केवल प्रशासनिक निर्देशों का पालन नहीं कर रहे होते है-बल्कि हम उस विरासत को सहेज रहे होते हैं, जिसने हमें एक पहचान दी है।

कोलकाता शहर विविधताओं का जीवंत प्रतीक है, यहाँ हिंदी का प्रसार एक सेतु निर्माण जैसा है। हिंदी की आरम्भिक पढ़ाई हो, या फिर हिंदी में समाचार पत्र के प्रकाशन की शुरुआत – इसकी जड़े कोलकाता से ही जुड़ी है। नराकास उपक्रमों की भूमिका इस सेतु को मजबूत करने की है। हमें यह सुनिश्चित करना है कि हिंदी न केवल कार्यालयों की दीवारों पर लगे बोर्डों तक सीमित रहे, बल्कि वह संवाद, संप्रेषण और सृजन का माध्यम बने। इसके लिए हमें प्रशिक्षण, तकनीकी संसाधनों और प्रेरक गतिविधियों को प्राथमिकता देनी होगी। मैं कह सकता हूँ कि हमारा नराकास सही दिशा में सक्रीय रुप से कार्य कर रहा है। अभी आपने पीपीटी के माध्यम से विगत 6 महीनों के इसके कार्यकलापों को देखा है। इसमें आप सभी का सहयोग मिलता रहता है। आप सभी का सहयोग और उत्साह ही हमारी सबसे बड़ी पूंजी है। हमारी नराकास की सक्रियता के कारण ही राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा वर्ष 2024-25 के लिए सर्वश्रेष्ठ श्रेणी में ''नराकास प्रोत्साहन सम्मान'' से नवाजा गया है। हमें आगे और कार्य करना है, और राष्ट्रपति पुरस्कार हासिल करना है।

नराकास की गृह पत्रिका अभिव्यक्ति के 32वें अंक के लिए उन्होंने नराकास संपादक मंडल के सभी सदस्यों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में हिंदी के विस्तार के लिए हमें निरंतर कार्य करने की आवश्यकता है, ताकि राजभाषा कार्यान्वयन की सतत यात्रा में अपनी कमियों को निरंतर कम करते हुए हम राजभाषा कीर्ति पुरस्कार का लक्ष्य प्राप्त कर सकें। हम अकेले कुछ नहीं कर पाएंगे, मंचासीन जितने वरिष्ठ अधिकारी है वे भी अपने-अपने कार्यालयों में राजभाषा अधिकारी के साथ बैठकर राजभाषा आंकड़ों की समीक्षा करें। जिन कार्यालयों को पुरस्कार नहीं मिला है वे अच्छा कार्य कर अन्य कार्यालयों को चुनौती दें एवं अपने कार्यालय को भी अगली बार पुरस्कार की पंक्ति में खड़ा करें। नराकास के मंच से जो गति राजभाषा के कार्य को मिल रही है उस गति को बनाए रखने के लिए हमें अपने कार्यों पर गर्व कर रूकना नहीं है बल्कि निरंतर गति को बनाएं रखना और कीर्ति पुरस्कार प्राप्त करने के लिए सतत प्रयास करते रहना है। इसके साथ ही हिंदी के प्रति समर्पित पंक्तियों का पाठ कर अपना वक्तव्य समाप्त किए।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति उपक्रम कोलकाता के तत्वावधान में सितम्बर 2025 से जनवरी 2026 के दौरान आयोजित कार्यक्रम / गतिविधियाँ

राजभाषा सम्मेलन सह कवि सम्मेलन का आयोजन– नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), कोलकाता के तत्वावधान में दिनांक 08 सितम्बर 2025 को ग्रिड कंट्रोलर ऑफ इंडिया लिमिटेड – पूर्वी क्षेत्रीय भार प्रेषण केंद्र, कोलकाता द्वारा एक दिवसीय राजभाषा सम्मेलन का सफल आयोजन किया गया। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य रहा सरकारी कार्यों में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करना, तकनीकी एवं प्रशासनिक क्षेत्रों में हिंदी की व्यावहारिक उपयोगिता को रेखांकित करना, राजभाषा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन व हिंदी के प्रचार-प्रसार को गति देना। सम्मेलन के अंतर्गत हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु विविध सत्र आयोजित किए गए। "भारतीय भाषाओं के संदर्भ मे हिन्दी: अंतरसंबंध, संवाद और सह-अस्तित्व" विषय पर आमंत्रित वक्ता प्रसिद्ध आलोचक डॉ. शंभुनाथ, पूर्व प्रोफेसर, कलकत्ता विश्वविद्यालय एवं निदेशक – भारतीय भाषा परिषद तथा संपादक वागर्थ पत्रिका ने कहा कि भाषा विवाद नहीं संवाद का विषय है। प्रो. संजय जायसवाल, विद्यासागर विश्वविद्यालय ने हिंदी और बंगला के अंतरसंबंधों पर अपनी बात रखी। प्रो. चित्रा माली, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय ने समाज और भाषा के बीच अंतरसंबंधों की बारिकियों को साक्षा किये। "कृत्रिम मेधा के क्षेत्र में हिंदी का अनुप्रयोग" विषय पर जयपुर से आमंत्रित तकनिकीविद श्री ओ.पी. अग्रवाल ने कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग के लिए उपलब्ध कृत्रिमा मेधा की प्रैक्टिकल जानकारी साक्षा किये। अंतिम सत्र में कवि सम्मेलन में कवयित्री सुश्री गौरी मिश्रा, नैनीताल, डॉ अशोक भाटी, उज्जैन तथा श्री विकाश बौखल ने अपनी कविताओं से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। इस अवसर पर महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, कोलकाता शाखा एवं विद्यासागर विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने भी सक्रिय सहभागिता की। विभिन्न सदस्य कार्यालयों, उपक्रमों और ग्रिड कंट्रोलर ऑफ इंडिया लिमिटेड – पूर्वी क्षेत्रीय भार प्रेषण से आए प्रतिभागियों ने अपनी उपस्थिति से इस आयोजन की गरिमा में वृद्धि की। यह सम्मेलन हिंदी की उपयोगिता नई दृष्टि प्रदान करने और तकनीकी युग में इसके प्रासंगिक एवं सशक्त स्वरूप को और अधिक गति देने मददगार साबित होगी।

यात्रा वृतांत/संस्मरण लेखन प्रतियोगिता- नराकास (उपक्रम) कोलकाता के तत्वावधान में गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एण्ड इंजीनियर्स लिमिटिड द्वारा 21 नवंबर 2025 को दो वर्गों (हिंदी भाषी एवं हिंदीतर भाषी) में हिंदी यात्रा वृतांत/संस्मरण लेखन प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। जीआरएसई द्वारा यह प्रतियोगिता कोलकाता स्थित सभी सार्वजनिक उपक्रमों के कार्मिकों के लिए आयोजित की गई थी। कार्यक्रम की अध्यक्षता जीआरएसई के महाप्रबंधक – प्रभारी (सुरक्षा, अग्नि, राजभाषा) कर्नल संजय आनंद ने की । इस अवसर पर विशिष्ठ अतिथि के रूप में गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के उप निदेशक (कार्यान्वयन) श्री विचित्रसेन गुप्त तथा नराकास के सह- सदस्य सचिव, श्री राजेश साव उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन जीआरएसई के प्रबंधक (राजभाषा) श्री मनीष कुमार सिंह के द्वारा किया गया।

राजभाषा संगोष्ठी सह अनुवाद प्रतियोगिता- दिनांक 15 नवम्बर को कोलकाता (उपक्रम) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में मंगलवार को सेल, केंद्रीय विपणन संगठन, मुख्यालय, कोलकाता में राजभाषा संगोष्ठी सह अनुवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उमेशचन्द्र कॉलेज के डॉ. कमल कुमार ने अनुवाद की मौलिकता एवं समस्याएं विषय पर सारगर्भित व्याख्यान दिया। संगोष्ठी सत्र में सेल, केंद्रीय विपणन संगठन के कार्यपालक निदेशक (वित्त व लेखा) एस के शर्मा, कार्यपालक निदेशक (विपणन) अभिजीत कुमार एवं कार्यपालक निदेशक (एम.एस) अनिल कुमार अरोड़ा उपस्थित थे। इस अवसर पर नराकास (उपक्रम) कोलकाता के प्रतिनिधि राजेश साव, कोल इंडिया भी उपस्थित हुए थें ।

नराकास के तत्वावधान में आयोजित इस राजभाषा संगोष्ठी सह अनुवाद प्रतियोगिता में समिति के 34 विभिन्न सदस्य कार्यालयों से कुल 62 अधिकारियों एवं कर्मियों ने हिस्सा लिया। इस अवसर पर श्री एस.के. शर्मा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि भाषा वह सेतु है जो विचारों, संस्कृतियों और लोगों को जोड़ती है । श्री अनिल कुमार अरोड़ा जी ने अपने संभाषण में कहा कि नराकास एक सशक्त मंच है जिसका उद्देश्य भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के प्रति सदस्य कार्यालयों को सजग करना है ।

नराकास (उपक्रम) कोलकाता के तत्वावधान में इस कार्यक्रम के सफल समन्वनय व संचालन में महाप्रबंधक (मा.सं.) संजित कुमार दास तथा राजभाषा अधिकारी अजय शंकर मिश्र की अग्रणी भूमिका रही।

हिंदीपुस्तक समीक्षा प्रतियोगिता – नराकास (उपक्रम), कोलकाता के तत्वावधान में दिनांक 05.12.2025 को श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट, कोलकाता द्वारा हिंदीपुस्तक समीक्षा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । उक्त प्रतियोगिता में सभी सदस्य कार्यालयों से अधिकारी/कर्मचारी ने (कुल 30 प्रतिभागियों हिंदीएवं हिंदीतर भाषी वर्ग) ने भाग लिया। उक्त कार्यक्रम में आदरणीय श्री विचित्रसेन गुप्त, उपनिदेशक (कार्यान्वयन), कोलकाता मुख्य अतिथि के रूप में पधारे, साथ ही निर्णायक के रूप में आदरणीय श्री प्रियंकर पालीवाल, साहित्यकार एवं पूर्व सयुंक्त निदेशक (राजभाषा), राष्ट्रीय वैज्ञानिक संस्थान और आदरणीय श्रीमती डॉ. सोमा बंधोपाध्याय, कुलपति, पश्चिम बंगाल शिक्षण - प्रशिक्षण विश्वविद्यालय ने भी कार्यक्रम को प्रकाशमय किया । आदरणीय श्री चंदन चटर्जी, सचिव, श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट, कोलकाता एवं आदरणीय श्री राजेश साव, प्रबंधक(राजभाषा), कोल इंडिया लिमिटेड के मार्गदर्शन में कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ ।

राजभाषा संगोष्ठी - नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

(उपक्रम), कोलकाता के तत्वावधान में 06 जनवरी 2026 को एमएसटीसी लिमिटेड द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों के राजभाषा अधिकारियों के लिए "विकसित भारत में राजभाषा की भूमिका" विषय पर राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का उद्देश्य विकसित भारत 2047 के लिए भारत की राजभाषा की भूमिका को समझना था।

संगोष्ठी का आरंभ वंदे मातरम् के 150वीं जयंती की स्मृति में बंकिम बाबू द्वारा रचित उपन्यास आनंदमठ पर आधारित आनंदमठ फिल्म की वंदे मातरम् गीत की प्रस्तुति से हुआ।

एमएसटीसी लि. की मुख्य महाप्रबंधक(का. व प्र.) श्रीमती रेणुका वर्मा ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए विकसित भारत में राजभाषा की भूमिका पर अपने विचार प्रस्तुत किए। इस आयोजन को उन्होंने हिंदी में कामकाज को बढ़ावा देने की ओर एक महत्वपूर्ण कदम बताया। उन्होंने प्रतिभागियों को इस संगोष्ठी से जुड़कर पूर्ण लाभ उठाने की सलाह दी और संगोष्ठी के सफलता की मनोकामना व्यक्त की।

संगोष्ठी के अगले चरण में विभिन्न उपक्रमों से आएं प्रतिभागियों ने विकसित भारत में राजभाषा की भूमिका विषय पर अपने आलेख का सार प्रस्तुत किया। बीएसएनएल कोलकाता टेलीफोन्स के श्री कुणाल किशोर ने विकसित भारत में राजभाषा की भूमिका विषय पर अपनी कविता प्रस्तुत की और भारतीय खाद्य निगम से प्रबंधक श्रीमती रीना पांडेय, इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लि. से वरिष्ठ हिंदी अधिकारी श्री दिनेश कुमार शर्मा, हिंदुस्तान कॉपर लि. से प्रबंधक श्री विकास कुमार सिंह, एमएसटीसी लि. से सहायक प्रबंधक सुश्री कामिनी गुप्ता और प्रबंधक डॉ. सुनील कुमार साव ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए। आगे नराकास सदस्य सह सचिव श्री राजेश साव ने विकसित भारत में विकसित नराकास पर अपने विचार व्यक्त किए। उक्त सभी रचनाओं का संकलन विकसित भारत में राजभाषा की भूमिका की पुस्तिका का लोकार्पण भी मंचासीन अधिकारियों द्वारा किया गया। इसके बाद व्हाटसअप पर पोल के माध्यम से प्रतिभागियों के मध्य मत-मतांतर संबंधी विभिन्न प्रश्न रखे गए जिन पर सभी प्रतिभागियों ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए।

तदुपरांत उप निदेशक, कार्यान्वयन(पूर्व),राजभाषा विभाग श्री विचित्र सेन गुप्त ने अपने विचारो को रखते हुए यह स्पष्ट किया कि विकसित भारत में राजभाषा की भूमिका बहुत निर्णायक है। राजभाषा विभाग इसके लिए अल्पकालिक और दीर्घकालिक दोनों योजनाओं पर निरंतर कार्यरत है। आनेवाला भविष्य हिंदी का है और भारतीय भाषाओं का है। ऐसे में हमारा काम केवल हिंदी अधिकारियों से पूरा नहीं होगा। हमें हर विभाग में हर कर्मचारी को हिंदी अधिकारी बनाना होगा। अगले मुख्य वक्ता के रूप में एमएसटीसी लि. के पूर्व महाप्रबंधक श्री मृत्युंजय श्रीवास्तव ने वर्तमान समाज में भाषिक विपन्नता का उल्लेख करते हुए स्वाधीनता सेनानियों के समाज की भाषिक संपन्नता का विवरण प्रस्तुत किया और भावी पीढ़ी के लिए भाषिक संपन्नता को अनिवार्य बताया। विकसित भारत में राजभाषा की भूमिका भी भाषिक संपन्नता से सीधे-सीधे जुड़ा हुआ है, क्योंकि भाषिक संपन्नता का समाज अपनी भाषा में काम करेगा और राजभाषा में भी काम करेगा।

अंतिम वक्ता के रूप में अनुसंधान अधिकारी, राजभाषा विभाग श्री ओम प्रकाश प्रसाद ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए मानव भाषा की अद्भुत शक्ति का उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि आदिम समाज में भाषा ने मनुष्य को एक-दूसरे से जोड़ा, एक-दूसरे को शक्तिशाली बनाया। ऐसे में भविष्य में भी विकसित भारत के निर्माण में राजभाषा विभिन्न भाषाओं को आपस में जोड़ेगी और भारत की शक्तिशाली राजभाषा का निर्माण कर विकसित भारत का मार्ग प्रशस्त करेगी। संगोष्ठी के अंत में श्री प्रियांशु प्रकाश, उप प्रबंधक, कोल इंडिया ने धन्यवाद ज्ञापन किया तथा विभिन्न उपक्रमों से आए प्रतिनिधि राजभाषा अधिकारियों को सम्मानित किया गया और समूह-चित्र के बाद संगोष्ठी समाप्त हुई। संचालन का कार्य डॉ. सुनील कुमार साव, प्रबंधक, राजभाषा ने किया।

कार्यकारी दल की बैठक– नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

उपक्रम, कोलकाता की कार्यकारी दल की बैठक दिनांक 14-01-2026 को समिति के सचिवालय कोल इंडिया लिमिटेड के कार्यालय परिसर में सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता समिति के सदस्य सचिव श्री राजेश वी. नायर, महाप्रबंधक (मा. सं./नीति) /राजभाषा सीआईएल ने की।

समिति के सदस्यों को अवगत कराया गया कि नराकास

कोलकाता उपक्रम -2 का गठन किया गया है, जिसमें हमारी समिति के 30 सदस्य कार्यालयों को नराकास कोलकाता उपक्रम-02 में शामिल किया गया है। वर्तमान में नराकास उपक्रम, कोलकाता के कुल 33 सदस्य कार्यालय है। कार्यसूची के मदवार विविध विषयों के संबंध में विचार-विमर्श के उपरांत निर्णय लिये गये तथा विभिन्न उपसमितियों को भी पुर्नगठित किया गया ।

"हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष" विषय पर राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), कोलकाता के तत्वावधान में भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा दिनांक 09 फरवरी 2026 को एक राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का मुख्य विषय "हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष" रहा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. विचित्र सेनगुप्त, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यांवयन कार्यालय, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग उपस्थित रहे। उन्होंने पत्रकारिता और सरलता से बताया । स्वतंत्रता का श्रेय अधिकत्तर पत्रकारों को भी दिया जाना चाहिए। विशिष्ट वक्ता के रूप में श्री जीतेन्द्र जितांशु, संस्थापक एवं संपादक 'सदीनामा' ने हिंदी पत्रकारिता की ऐतिहासिक यात्रा, उसके सामाजिक दायित्व तथा वर्तमान परिदृश्य पर अपने विचार रखे और श्रोताओं को हिंदी पत्रकारिता के कई अनसुनी पहलुओं से वाकिफ कराया गया। उन्होनें पत्रकारिता के अबतक के इतिहास को जोड़ते हुए बताया कि हिंदी पत्रकारिता का संभावित भविष्य क्या है? उन्होने इस विषय पर सकारात्मक दृष्टि बताई कि पत्रकारिता एक उत्कृष्ट नजरिये से हम सब के समक्ष उपस्थित होकर सामने आएगी। इस दौरान श्री जीतेंद्र जितांशु जी द्वारा सभी प्रतिभागियों को "सदीनामा" पत्रिका की प्रतियां स्मारिका के रूप में वितरित की गई । उन्होंने प्रतिभागियों द्वारा पूछे गए पत्रकारिता पर प्रश्न का उत्तर भी बहुत सहज भाव से दिए । उसके बाद राजभाषा कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। इस अवसर पर महाप्रबंधक (क्षेत्र) श्री अमरेश कुमार की गरिमामयी उपस्थिति रही, जिन्होंने अतिथियों का स्वागत करते हुए हिंदी पत्रकारिता के लोकतांत्रिक मूल्यों एवं जनसरोकारों में योगदान को रेखांकित किया एवं उन्होंने बताया की पत्रकारिता के जगत में पाठकों पर उन्हें भरोसा है। संगोष्ठी में नराकास के सदस्य कार्यालयों से आए प्रतिनिधियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में खुले मंच पर प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें राजभाषा सम्बंधी प्रश्न श्री राजेश साव, प्रबंधक (राजभाषा), कोल इंडिया व सदस्य सह सचिव, नराकास द्वारा पूछे गए। इस सत्र ने प्रतिभागियों में विशेष रुचि एवं संवाद को प्रोत्साहित किया।

पूरे कार्यक्रम का सफल एवं प्रभावी संचालन श्रीमती रीना पाण्डेय, प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा किया गया। कार्यक्रम के अंत में श्रीमती शांति नीलिमा कच्छप, सहायक महाप्रबंधक (हिंदी) ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए सभी अतिथियों, वक्ताओं एवं प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

वंदे मातरम् के 150 वर्ष :
भारतीय राष्ट्रवाद की अमर हुंकार और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का गीत

कुणाल वैद्य
प्रबन्धक (आंतरिक लेखा परीक्षा)
ब्रिज एण्ड रूफ कंपनी (इंडिया) लिमिटेड

भारतीय इतिहास के पन्नों में कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो समय की सीमाओं को लांघकर अमर हो जाते हैं। 'वंदे मातरम' केवल दो शब्द नहीं, बल्कि वह मंत्र है जिसने करोड़ों भारतीयों के हृदय में सुप्त पड़ी राष्ट्रभक्ति को जाग्रत किया। वर्ष 2025 इस कालजयी रचना के 1500 वर्ष के उद्घाटन का साक्षी बना। इस ऐतिहासिक अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्मारक डाक टिकट और सिक्का जारी कर उन असंख्य बलिदानियों को श्रद्धांजलि दी, जिनके लिए यह गीत उनके जीवन का अंतिम घोष था।

साहित्यिक उद्भवः बंकिम चंद्र और 'आनंदमठ' का सृजन

'वंदे मातरम' की रचना प्रख्यात बंगाली साहित्यकार बंकिम चंद्र चटर्जी ने की थी। हालांकि यह गीत उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'आनंदमठ' का हिस्सा बना, लेकिन इसकी रचना उपन्यास से कुछ वर्ष पूर्व ही हो चुकी थी। 1882 में जब 'आनंदमठ' पहली बार एक स्वतंत्र पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुआ, तब भारत एक गहरे संकट से गुजर रहा था।

यह उपन्यास 1770 के भीषण बंगाल अकाल की पृष्ठभूमि पर आधारित है। बंकिम चंद्र ने अपनी लेखनी के माध्यम से उस समय के संन्यासी विद्रोह को एक आध्यात्मिक और राष्ट्रवादी रंग दिया। उपन्यास में 'वंदे मातरम' का गायन भवानंद नामक पात्र द्वारा किया गया है, जो राष्ट्र को एक 'माता' के रूप में देखने की चेतना जगाता है। बंकिम की अन्य रचनाएं जैसे 'कपालकुंडला' (जिसकी नायिका मृणालिनी के चरित्र चित्रण ने पाठकों को मंत्रमुग्ध किया) और 'मृणालिनी' भी उनकी सूक्ष्म दृष्टि और भारतीय संस्कृति के प्रति अगाध प्रेम को दर्शाती है।

दार्शनिक आधारः 'जननी जन्मभूमिश्च' की प्राचीन संकल्पना

'वंदे मातरम' में जिस 'मातृभूमि की वंदना की गई है, उसका दार्शनिक आधार भारत केप्राचीन ग्रंथो में निहित है। वाल्मीकि रामायण में भगवान श्रीराम का प्रसिद्ध कथन है- जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' (माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ हैं)। बंकिम चंद्र ने इसी महान संकल्पना को आधुनिक राष्ट्रवाद के ढांचे में ढाल दिया। उन्होंने भूमि को केवल मिट्टी का टुकड़ा नहीं, बल्कि साक्षात 'दुर्गा' और

'लक्ष्मी' के रूप में प्रतिष्ठित किया, जिसने भारतीयों के लिए अपनी धरती की रक्षा को एक धार्मिक कर्तव्य बना दिया।

बंग-भंग आंदोलन: जब गीत बना 'युद्धघोष' 1905 का समय भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ था। लॉर्ड कर्जन द्वारा किए गए बंगाल विभाजन (बंग-भंग) के निर्णय ने पूरे देश में असंतोष की ज्वाला भड़का दी। इस दौरान 'वंदे मातरम' सड़कों पर उतर आया। बंगाल की सड़कों पर हजारों लोग एक स्वर में इसका पाठ कर रहे थे।

ब्रिटिश सरकार इस गीत की शक्ति से इस कदर भयभीत थी कि उन्होंने इसे दबाने के लिए दमनकारी नीतियों का सहारा लिया। बंगाल प्रशासन ने रंगपुर में विभाजन विरोधी नेताओं को 'विशेष हवलदार' (Special Constables) के रूप में सेवा देने का विचित्र आदेश दिया, ताकि वे अपने ही लोगों को इस गीत को गाने से रोक सकें। लेकिन यह प्रयास विफल रहा। ब्रिटिश अधिकारियों ने इस गीत की तुलना फ्रांसीसी क्रांति के प्रसिद्ध गीत 'ना मार्सिलेस' (La Marseillaise) से की, जो यह सिद्ध करता है कि वे इसके क्रांतिकारी प्रभाव को भली-भांति समझ चुके थे।

महात्मा गांधी और वंदे मातरम: प्रतिरोध का प्रतीक

महात्मा गांधी ने इस गीत की महत्ता को गहराई से समझा था। उन्होंने स्वीकार किया कि 'वंदे मातरम' प्रतिरोध और एकता के लिए एक महान युद्धघोष बन चुका है। 1905 में उन्होंने अपने प्रकाशन 'इंडियन ओपिनियन' (और बाद में 'यंगइण्डिया' के माध्यम से) इस गीत की भूरी-भूरी प्रशंसा की। गांधी जी का मानना था कि यह गीत धर्म और जाति की सीमाओं को पार कर राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने की क्षमता रखता है।

अंतरराष्ट्रीय क्षितिज पर गूँज : 'वंदे मातरम की गूंज केवल भारत की भौगोलिक सीमाओं तक सीमित नहीं रही। 1909 में भारतीय क्रांतिकारियों ने पेरिस और जेनेवा से 'वंदे मातरम' नामक पत्रिका का प्रकाशन शुरु किया। भीखाजी कामा जैसे देशभक्तों ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर इस मंत्र के साथ भारत की स्वतंत्रता का पक्ष रखा।

आधुनिक संदर्भ में, 2025 में गोवा में आयोजित 'WAVES फिल्म बाज़ार कार्यक्रम के दौरान दक्षिण कोरियाई सांसद जेवन किम (Jaewon Kim) द्वारा मंच पर 'वंदे मातरम' गाना यह दर्शाता है कि इस गीत की सुरीली धुन और इसका संदेश आज भी वैश्विक स्तर पर सम्मान प्राप्त कर रहा है।

संवैधानिक गरिमा और राष्ट्रीय प्रतीक : स्वतंत्रता के पश्चात, भारतीय संविधान सभा ने वंदे मातरम को राष्ट्रीय गीत के रूप में स्वीकार किया। हालांकि राष्ट्रीय गान (जन गण मन) के लिए आधिकारिक तौर पर समय सीमा (लगभग 52 सेकेंड) निर्धारित की गई है, लेकिन राष्ट्रीय गीत के लिए सरकार ने ऐसी कोई विशिष्ट समय सीमा तय नहीं की है।

भारतीय संविधान का अनुच्छेद 51A (8) प्रत्येक नागरिक को यह निर्देश देता है कि वह राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रीय गान का सम्मान करे। 'वंदे मातरम' इसी श्रेणी में राष्ट्रीय सम्मान का प्रतीक बनकर उभरा है।

स्वाधीनता संग्राम में वंदे मातरम् गीत और हिंदी भाषा का योगदान

रमेश साव
सहायक निदेशक (राजभाषा)
उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर
कर्मचारी राज्य बीमा निगम

आज हमारे देश को स्वतंत्र हुए लगभग 75 वर्ष से अधिक वर्ष का समय हो चुका है पर आज जब भी हम देशप्रेम से संबंधित गीत सुनते हैं तो शरीर में एक नई उर्जा का संचार होता है तथा देश के लिए कुछ कर गुजरने का विचार मन में जरूर आता है। आज यदि हम अपने देश की स्वाधीनता आन्दोलन के बारे में विचार करें तो भारतीय स्वाधीनता संग्राम केवल एक राजनीतिक आंदोलन नहीं था, अपितु यह एक सांस्कृतिक, सामाजिक और भावनात्मक क्रांति भी थी। इस महान संग्राम में वन्दे मातरम् गीत और हिंदी भाषा ने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन दोनों ने करोड़ों भारतीयों को एक सूत्र में बांधकर राष्ट्रीय चेतना जागृत की और स्वतंत्रता की अलख जगाई फलस्वरूप 15 अगस्त 1947 को हमारा देश आजाद हुआ।

स्वाधीनता संग्राम में वन्दे मातरम् का योगदान : वन्दे मातरम गीत की रचना महान साहित्यकार बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय ने अपने उपन्यास आनंदमठ (1882) में की थी। यह गीत संस्कृत और बांग्ला भाषा के सुंदर समन्वय से रचा गया है। इस गीत में भारत माता की स्तुति के माध्यम से देश के प्रति अगाध प्रेम और समर्पण की भावना व्यक्त की गई है। गीत में भारत को एक माता के रूप में चित्रित किया गया है, जो सुजलाम्, सुफलाम्, मलयजशीतलाम्, शस्यश्यामलाम् है।

वन्दे मातरम् ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में राष्ट्रीय जागरण का कार्य किया। सन् 1896 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में महान कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इस गीत को गाया, जिससे यह राष्ट्रीय गीत के रूप में प्रतिष्ठित हो गया। इस गीत की प्रत्येक पंक्ति में देशभक्ति की ऐसी तरंग थी जो सुनने वाले के हृदय में राष्ट्रप्रेम की अग्नि प्रज्वलित कर देती थी। उस समय यह गीत भारतीयों को एकजुट करने और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष के लिए प्रेरित करने का सशक्त माध्यम बन गया थी।

1905 के बंगाल विभाजन के विरोध में वन्दे मातरम् एक युद्धघोष बन गया। यह स्वदेशी आंदोलन का मूलमंत्र था। प्रदर्शनों, जुलूसों और सभाओं में जब यह गीत गाया जाता था, तो हजारों लोगों में एक नई ऊर्जा और साहस का संचार होता था। अंग्रेज सरकार ने इस गीत की शक्ति को समझते हुए इसे कई स्थानों पर देशद्रोही घोषित कर दिया और इसे गाने पर प्रतिबंध लगा दिया। परंतु यह प्रतिबंध इस गीत की लोकप्रियता को और बढ़ाने का कार्य किया। भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, खुदीराम बोस जैसे वीर क्रांतिकारी फांसी के तख्ते पर जाते समय इसी गीत को गाते थे। नेताजी सुभाष चंद्र बोस की आजाद हिंद फौज के सैनिक युद्ध में जाते समय वन्दे मातरम् का उद्घोष करते थे।

हिंदी भाषा का योगदान : जब भी हम देश के स्वाधीनता संग्राम की चर्चा करते हैं तो इस संग्राम में हिंदी भाषा के योगदान के महत्व को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। भारत जैसे बहुभाषी देश में एक ऐसी भाषा की आवश्यकता थी जो विभिन्न प्रांतों के लोगों को आपस में जोड़ सके। हिंदी ने यह कार्य अत्यंत सफलतापूर्वक किया। महात्मा गांधी ने हिंदी को जनमानस की भाषा बताया और इसे राष्ट्रीय एकता का प्रमुख साधन माना। 1918 में हिंदी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन में गांधीजी ने कहा था कि राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है। उन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करने के लिए अथक प्रयास किए।

हिंदी भाषा स्वतंत्रता आंदोलन के संदेशों को जन-जन तक पहुंचाने का सबसे प्रभावी माध्यम थी। हिंदी पत्र-पत्रिकाओं ने राष्ट्रीय चेतना जगाने में अहम भूमिका निभाई। पंडित माधवराव सप्रे का हिंदी केसरी, गणेश शंकर विद्यार्थी का प्रताप, महावीर प्रसाद द्विवेदी का सरस्वती, बालमुकुंद गुप्त का भारत मित्र आदि समाचार पत्रों ने अंग्रेजी शासन की नीतियों का पर्दाफाश किया और जनता में स्वतंत्रता की अलख जगाई। इन समाचार पत्रों में प्रकाशित लेख, कविताएं और संपादकीय टिप्पणियां ब्रिटिश शासन के विरुद्ध जनमत तैयार करने में सहायक सिद्ध हुईं। गणेश शंकर विद्यार्थी जैसे निडर पत्रकारों ने अपनी लेखनी से अंग्रेजी सरकार को कई बार चुनौती दी और अंततः देश के लिए शहीद हो गए।

हिंदी साहित्य ने स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा प्रदान की। भारतेंदु हरिश्चंद्र को आधुनिक हिंदी साहित्य का जनक माना जाता है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीयों में राष्ट्रीय भावना जागृत की। उनका प्रसिद्ध कथन- निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल; हिंदी के महत्व को प्रतिपादित करता है।

मुंशी प्रेमचंद ने अपनी कहानियों और उपन्यासों में समाज की विसंगतियों, अन्याय और शोषण का यथार्थ चित्रण किया। उनकी रचनाओं ने भारतीय समाज की दशा को उजागर किया और परिवर्तन की चेतना जगाई। जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी; निराला, सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा की रचनाओं में राष्ट्रीयता की भावना प्रबल रूप से विद्यमान है। माखनलाल चतुर्वेदी, सुब्रह्मण्यम भारती, रामप्रसाद बिस्मिल जैसे कवियों ने अपनी ओजस्वी कविताओं से युवाओं में देशभक्ति की भावना भरी। माखनलाल चतुर्वेदी की कविता; पुष्प की अभिलाषा; में देश के लिए शहीद होने की तमन्ना व्यक्त की गई है। रामप्रसाद बिस्मिल की कविता; सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है; क्रांतिकारियों का प्रिय गीत था। यह गीत आज भी देशभक्ति और बलिदान का प्रतीक है।

हिंदी की सरल और सुगम प्रकृति के कारण यह आम जनता की भाषा बन गई। महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल, मदन मोहन मालवीय जैसे नेता अपने भाषणों में हिंदी का प्रयोग करते थे, जिससे उनका संदेश व्यापक जनसमूह तक पहुंचता था। भारत छोड़ो आंदोलन,;असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन जैसे राष्ट्रीय आंदोलनों में हिंदी नारों और गीतों ने जनता को एकजुट किया। इंकलाब जिंदाबाद, साम्राज्यवाद मुर्दाबाद, अंग्रेजों भारत छोड़ो जैसे नारे हिंदी में ही गूंजते थे। ये नारे केवल शब्द नहीं थे, बल्कि करोड़ों भारतीयों की आवाज थे जो स्वतंत्रता की मांग कर रहे थे।

भारत में विभिन्न भाषाएं बोली जाती हैं, परंतु पूरे भारत को एकता के एक सूत्र में जोड़ने में हिंदी ने एक सेतु का कार्य किया। उत्तर भारत से लेकर दक्षिण भारत तक, पूर्व से पश्चिम तक, हिंदी ने विभिन्न प्रांतों के लोगों को आपस में जोड़ा। यह भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं थी, बल्कि सांस्कृतिक और भावनात्मक एकता का प्रतीक भी थी। हिंदी में रचे गए राष्ट्रगीत, देशभक्ति गीत और नारे पूरे देश में समान रूप से गूंजते थे।

अंततः हम देखते हैं कि भारतीय स्वाधीनता संग्राम में वन्दे मातरम्, गीत और हिंदी भाषा का योगदान अविस्मरणीय है। वन्दे मातरम् ने जहां भारतीयों के हृदय में देशभक्ति की अग्नि प्रज्वलित की और उन्हें स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी वहीं हिंदी भाषा ने भारतीयों की राष्ट्रीय एकता को मजबूत किया और विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को एक मंच पर लाया। इसने जनजागरण, साहित्यिक अभिव्यक्ति, पत्रकारिता और जन संचार के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन को शक्ति प्रदान की। आज जब हम स्वतंत्र भारत में सांस ले रहे हैं, तो हमें उन महान देशभक्तों को याद करना चाहिए जिन्होंने वन्दे मातरम् के उद्घोष और हिंदी भाषा के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम को नई ऊर्जा दी थी एवं देश को पराधीनता से मुक्ति दिलाई।

वंदे मातरम:
भारत के राष्ट्रीय अभिव्यक्ति के 150 वर्ष

प्रियांशु प्रकाश
उप प्रबंधक (राजभाषा)
कोल इण्डिया लिमिटेड

प्रस्तावना: केवल एक गीत नहीं, एक जनआंदोलन

"वंदे मातरम" केवल एक गीत नहीं; यह भारतीय राष्ट्रवाद का एक जीवंत जीवाश्म है, जिसकी परतों में औपनिवेशिक आकांक्षाएँ, सांस्कृतिक पुनर्जागरण, राजनीतिक संघर्ष और सामाजिक जटिलताएँ सन्निहित हैं। यह भारतीय राष्ट्रीय चेतना का सबसे प्रखर और भावनात्मक रूप से आवेशित नारा है, जिसने एक सम्पूर्ण राष्ट्र को स्वतंत्रता के संघर्ष में एक सूत्र में बांधा। 1870 के दशक में रचित यह गीत 2026 में अपने रचना के 150 वर्ष पूरे करेगा। इन डेढ़ सौ वर्षों में इसने एक काव्यात्मक प्रेमगीत से लेकर एक युद्धघोष का, और फिर एक सांस्कृतिक पहचान से लेकर एक राजनीतिक विवाद का रूप ले लिया। लेकिन यह आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना अपने रचनाकाल में । यह आलेख इसके उद्भव, यात्रा और प्रभाव का एक सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

रचना की पृष्ठभूमि, समकालीन देशकाल ऐतिहासिक संदर्भ (1760-1870):

- बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय (1838-1894) का जन्म और कार्यकाल एक उथल-पुथल भरे दौर में हुआ। 1764 में बक्सर की लड़ाई के बाद बंगाल पर ईस्ट इंडिया कंपनी की सत्ता स्थापित हो चुकी थी। 19वीं सदी का बंगाल, प्लासी (1757) और बक्सर (1764) के बाद, ब्रिटिश साम्राज्यवाद के आर्थिक शोषण का केंद्र था। 1770 का 'चियाट्टोरर मोन्वोंतोर' (Great Bengal Famine) जिसमें अनुमानतः 1 करोड़ लोग मारे गए, ब्रिटिश शोषणकारी भू-राजस्व नीतियों का सीधा परिणाम था। इसी पृष्ठभूमि में 1763 से 1800 तक चले 'संन्यासी-फकीर विद्रोह' ने जनाक्रोश को अभिव्यक्ति दी जो अकाल, करों के शोषण और आर्थिक दमन के खिलाफ था। यह विद्रोह बंकिम के उपन्यास 'आनंदमठ' (1882) की केंद्रीय घटना है। 'आनंदमठ' इसी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में लिखा गया, जहाँ 'वंदे मातरम' सन्यासियों के होंठों पर देशभक्ति और आध्यात्मिक जयघोष के रूप में फूटता है।
- **बंकिमचंद्र: एक सिविल सेवक और राष्ट्रवादी बुद्धिजीवी:** बंकिम एक डिप्टी कलक्टर और डिप्टी मजिस्ट्रेट के रूप में ब्रिटिश राज के अधीन सेवारत थे, किंतु उनके लेखन में एक गहरी राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक पुनरुत्थानवाद (Cultural Revivalism) झलकता है। उन्होंने 'बंगदर्शन' पत्रिका का संपादन किया और हिंदू दर्शन व इतिहास के प्रति गहरी रुचि रखी। 'वंदे मातरम' की रचना 1870 के दशक में हुई, हालांकि यह 1882 में प्रकाशित 'आनंदमठ' के पहले अध्याय में शामिल की गई। कुछ विद्वानों का मानना है कि इसकी प्रेरणा 1875 में स्थापित 'आर्य समाज' के "भारतमाता की जय" के नारे से भी मिली हो सकती है।
- **साहित्यिक संरचना एवं प्रतीकवाद:** बंकिमचंद्र ने राष्ट्र को 'माता' के रूप में चित्रित कर एक गहन लोकविचार को साधा। भारतीय संस्कृति में 'मातृभूमि' की अवधारणा प्राचीन काल से रही है, जहाँ धरती को माता (भूमि माता, धरती माता) कहा जाता है। गीत के प्रारंभिक दो पद संस्कृतनिष्ठ बंगला में हैं, जो मातृभूमि का प्रकृति के रूप में वर्णन करते हैं – "सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्" (जल से सींची हुई, फलों से लदी हुई, दक्षिण की वायु से शीतल)। बाद के पदों में मातृभूमि को देवी दुर्गा के रूप में अवतरित देखा गया है – "त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी"। यह प्रतीकवाद द्वैतवादी था: एक ओर, यह भूमि-पूजा (Tellurism)

की प्राचीन भारतीय अवधारणा से जुड़ता था, जहाँ भूमि को पोषण देने वाली माता माना जाता है; दूसरी ओर, यह शक्ति (शक्ति आराधना) के रूप में एक सक्रिय, युद्धकारी राष्ट्रीय पहचान का निर्माण करता था।

स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका और जनमानस पर प्रभाव

- **राष्ट्रीय आंदोलन का मंत्र बनना:** 1896 में कलकत्ता में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में पहली बार रवींद्रनाथ टैगोर ने 'वंदे मातरम' गाया। 1905 में बंगाल विभाजन के विरोध में यह गीत जन-जन का नारा बन गया। इसने राष्ट्रवाद को एक ठोस, गेय और भावनात्मक आधार दिया।
- **प्रतिरोध का प्रतीक:** अंग्रेजी शासन ने जल्द ही इसे एक खतरे के रूप में पहचान लिया। इस गीत को गाने वालों को प्रताड़ित किया जाने लगा, जेलों में ठूंसा जाने लगा। यह दमन गीत की लोकप्रियता को और बढ़ाता गया। भगत सिंह, खुदीराम बोस, सुभाष चंद्र बोस सहित अनेक क्रांतिकारियों के लिए यह प्रेरणा और प्रतिज्ञा बना। नेताजी की आजाद हिंद फौज की रग-रग में यह गीत समाया हुआ था।
- **ब्रिटिश प्रतिक्रिया:** अंग्रेजों ने इसे 'राजद्रोही' और 'सांप्रदायिक' करार दिया। इसे गाने वालों को गिरफ्तार किया जाने लगा, जिसने इसके 'वर्जित फल' के आकर्षण को और बढ़ाया।
- **मनोवैज्ञानिक प्रभाव:** 'वंदे मातरम' ने एक सामूहिक पहचान (Collective Identity) का निर्माण किया। यह भारत की विविधता में एकता को दर्शाता था। इसने 'हम-भावना' (We-feeling) को मजबूत किया और औपनिवेशिक मानसिकता के विरुद्ध एक मनोवैज्ञानिक कवच प्रदान किया। गीत की धुन और शब्द सामूहिक उत्साह और बलिदान की भावना जगाने में सक्षम थे।
- **सामूहिक पहचान का निर्माण:** एमिल दुर्खीम के 'सामूहिक उत्साह (Collective Effervescence)' सिद्धांत की तरह, सामूहिक गायन एक एकात्मक अनुभव पैदा करता था।
- **मातृ-प्रतीक की शक्ति:** मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, 'माता' का प्रतीक सर्वाधिक आदिम, सुरक्षा और निस्वार्थ प्रेम से जुड़ा आरोपण (Archetype) है। राष्ट्र को माता बनाकर, उसकी सेवा और बलिदान सर्वोच्च धर्म बन गया।
- **अंग्रेजों के विरुद्ध मनोवैज्ञानिक कवच:** औपनिवेशिक शासन ने भारतीयों में हीन भावना (Inferiority Complex) पैदा की थी। 'वंदे मातरम' का गायन एक मनोवैज्ञानिक प्रतिकार (Psychological Resistance) था, जो गर्व और आत्मविश्वास जगाता था।

विवाद, समझौता और संवैधानिक स्थिति

सांप्रदायिक विभाजन और विवाद (1930 के दशक):

1937 के प्रांतीय चुनावों के बाद, कांग्रेसी मंत्रिमंडलों ने विधानसभाओं में इसे गाने का प्रस्ताव रखा। मुस्लिम लीग ने इसका विरोध किया। मुस्लिम नेताओं (जैसे मुहम्मद अली जिन्ना) का तर्क था कि यह गीत 'मूर्ति पूजा' (Idolatry) को बढ़ावा देता है और इस्लाम के एकेश्वरवाद के विपरीत है।

1937 की कांग्रेस समिति: एक तथ्यात्मक समझौता:

समिति: जवाहरलाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, सुभाष चंद्र बोस सहित।

निर्णय:- केवल पहले दो पद (जो प्रकृति के वर्णन तक सीमित हैं) सार्वजनिक/सरकारी कार्यक्रमों में गाए जाएंगे। यह एक महत्वपूर्ण धर्मनिरपेक्ष समझौता था, जो गीत के सार्वभौमिक अंश को स्वीकार करता था।

संविधान सभा का निर्णय (1950):

24 जनवरी 1950 को, डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने घोषणा की कि 'जन-गण-मन' को राष्ट्रगान और 'वंदे मातरम' को 'राष्ट्रीय गीत' का दर्जा दिया जाता है, जिसका "समान सम्मान" किया जाएगा। यह निर्णय ऐतिहासिक महत्व को स्वीकार करते हुए व्यावहारिक एकता को केंद्र में रखता था।

वर्तमान प्रासंगिकता और एक बहुआयामी धरोहर

सांस्कृतिक-ऐतिहासिक धरोहर:

यह स्वतंत्रता संग्राम का एक 'सांस्कृतिक अभिलेख' (Cultural Artifact) है। इसे संजोना भारत की लोकतांत्रिक, बहुलवादी और संघर्षशील यात्रा को समझना है।

सामाजिक-राजनीतिक संदर्भ:

राष्ट्रीय एकता का प्रतीक: सेना परेड, स्कूली कार्यक्रमों में इसका उपयोग राष्ट्रीय भावना को दृढ़ करता है।

राजनीतिक पहचान का मार्कर: यह अक्सर 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' बनाम 'धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद' की बहसों के केंद्र में रहता है। कुछ इसे बहिष्कार की राजनीति का शिकार मानते हैं, जबकि अन्य इसे राष्ट्रीय गौरव का अनिवार्य प्रतीक।

शिक्षा व्यवस्था में: इसे पाठ्यक्रम में शामिल करने के निर्णय शिक्षा और राष्ट्र-निर्माण के अंतर्संबंध को दर्शाते हैं।

आर्थिक परिप्रेक्ष्य में प्रतीकवाद:

"सुजलां सुफलां" (जल से सींची हुई, फलों से लदी हुई) का वर्णन केवल काव्यात्मक नहीं; यह एक समृद्ध, आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था की आकांक्षा है। यह औपनिवेशिक शोषण द्वारा लूटी गई अर्थव्यवस्था के विपरीत एक स्वप्नलोक था।

अगर हम वैश्विक पटल पर तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में देखें और विश्व में राष्ट्रीय गीतों के मनोविज्ञान और भूमिका को देखेंगे तो पाते है कि विश्व भर की स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रगीतों ने जनमानस पर असीम प्रभाव डाला है, उन्हें एकजुट किया है तथा संघर्ष को मजबूती प्रदान की है । उदाहरणार्थ-

1. "ला मार्सेइलाइज़" (फ्रांस, 1792):

   समानता: फ्रांसीसी क्रांति के दौरान रचित, यह भी एक युद्धगीत था जिसने जनसामान्य को उद्वेलित किया। इसमें देशभक्ति को हिंसक विद्रोह ("Aux armes, citoyens!") से जोड़ा गया। यह 'क्रांतिकारी राष्ट्रवाद' का प्रतीक बना।

   अंतर: 'वंदे मातरम' आध्यात्मिक और मातृत्वमय प्रतीकवाद का उपयोग करता है, जबकि 'ला मार्सेइलाइज़' सीधे युद्ध और दुश्मन के रक्त ("Qu'un sang impur abreuve nos sillons") का आह्वान करता है।

2. "न्कोसि सिकेलेली आफ्रिका" (दक्षिण अफ्रीका, 1897):

   समानता: यह गीत भी दक्षिण अफ्रीका में औपनिवेशिक विरोध और रंगभेद विरोधी संघर्ष का प्रतीक बना। इसे एक प्रार्थना के रूप में संरचित किया गया है, ठीक वैसे ही जैसे 'वंदे मातरम' एक स्तुति है।

   अंतर: यह एक स्पष्ट ईसाई प्रार्थना है, जबकि 'वंदे मातरम' की प्रार्थना हिंदू देवीत्व से जुड़ी है, हालाँकि इसका प्रथम भाग सार्वभौमिक है।

3. "द स्टार-स्पैंगल्ड बैनर" (USA, 1814):

   समानता: यह भी युद्ध (1812 का युद्ध) की पृष्ठभूमि में रचा गया था और धीरे-धीरे राष्ट्रीय पहचान का हिस्सा बना।

   अंतर: यह एक विशिष्ट घटना (फोर्ट मेकहेनरी की घेराबंदी) और एक वस्तु (झंडा) पर केंद्रित है, जबकि 'वंदे मातरम' एक अमूर्त अवधारणा (मातृभूमि) की पूजा है।

निष्कर्ष: 'वंदे मातरम' की 150 वर्षों की यात्रा हमें सिखाती है कि राष्ट्रीय प्रतीक स्थिर नहीं होते; वे बहस, संघर्ष और पुनर्व्याख्या के माध्यम से जीवित रहते हैं। इसकी सबसे बड़ी ताकत और सबसे बड़ी चुनौती एक ही है: इसका 'गहरा सांस्कृतिक और धार्मिक प्रतीकवाद'। इसे संजोने का अर्थ है इसकी जटिलताओं को स्वीकार करना – यह मातृभूमि के प्रति प्रेम की सार्वभौमिक भावना और एक विशिष्ट सांस्कृतिक अभिव्यक्ति दोनों है।

भविष्य के लिए मार्ग इसी संतुलन में निहित है: इसके ऐतिहासिक महत्व और 1937/1950 के समझौतों का सम्मान करते हुए, इसे एक समावेशी सांस्कृतिक विरासत के रूप में प्रस्तुत करना, न कि एक विभाजनकारी राजनीतिक हथियार के रूप में। जैसे माता सभी संतानों के लिए समान होती है, वैसे ही इस गीत की विरासत भी सभी भारतीयों की साझा धरोहर है, जिसकी व्याख्या उदारता और पारस्परिक सम्मान के साथ की जानी चाहिए। यही इस अमर गीत को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

वंदे मातरम् के विविध संस्करण

राकेश देवगड़े
अनुवादक
कोल इण्डिया लिमिटेड

वंदे मातरम के 100 से अधिक संस्करण उपलब्ध हैं, जिनमें शास्त्रीय संगीत से लेकर भावपूर्ण सिनेमाई सुगम संगीत तक सम्मलित हैं। इन संस्कारण में मुख्य रूप से बंकिम चंद्र चटर्जी द्वारा रचित मूल संस्कृत-बांग्ला संस्करण, रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा स्वरबद्ध किया गया संस्करण, और श्री अरबिंदो का अंग्रेजी अनुवाद, आरिफ मोहम्मद खान का उर्दू अनुवाद, राष्ट्रवादी कवि सुब्रमण्यम भारती द्वारा तमिल में अनुवादित संस्कारण तथा हेमंत कुमार, लता मंगेशकर जैसे कलाकारों द्वारा गाये गए विभिन्न धुन वाले संस्करण शामिल हैं।

वंदे मातरम कभी किसी एक संगीतकार या शैली तक सीमित नहीं रहा। इसे अनेकों ने गाया, संवारा और समृद्ध किया है। बंगाल के गलियारों से लेकर कर्नाटक संगीत के भव्य मंचों तक, राष्ट्रवादी रैलियों से लेकर फिल्म स्टूडियो तक। वंदे मातरम के विविध संस्करण संगीत और गायन तथा भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहे हैं।

महान दार्शनिक योगी श्री अरबिंदो घोष ने 'वंदे मातरम' का अंग्रेजी में पद्य और गद्य अनुदित किया। जिस कारण यह गीत व्यापक दर्शकों तक पहुँचाया। जब श्री अरबिंदो घोष ने इस गीत की प्रसंशा कि यह गीत 'बंगाल का राष्ट्रगीत' बन गया। जिसे उन्होंने "Mother, I Praise Thee" (माता, मैं तुम्हें नमन करता हूँ) के रूप में काव्यात्मक रूप दिया। आरिफ मोहम्मद खान द्वारा किया गया "वंदे मातरम" का अनुवाद है "तस्लीमात, माँ, तस्लीमात" जिसका अर्थ है 'नमन है, माँ, नमन है' या 'माँ, मैं तुम्हें सलाम करता हूँ'।

कलकत्ता (कोलकाता) से अगस्त 1906 में "वंदे मातरम" नाम से इंग्लिश अखबार का प्रकाशन शुरू हुआ जिसके संपादक बिपिन चंद्र पाल थे तथा कुछ दिनों पश्चात श्री अरबिंदो घोष एक मुख्य संपादक और वैचारिक नेता के तौर पर इससे जुड़े। यह एक राष्ट्रवादी रोज़ाना अखबार था जो आज़ादी और आत्मनिर्भरता की बात करता था।

भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु, रामप्रसाद बिस्मिल और अशफ़ाक़ उल्लाह ख़ान जैसे स्वतंत्रता सेनानियों ने भी वंदे मातरम का उद्घोषणा की थी। 'वंदे मातरम' ने अंग्रेज़ विरोधी राष्ट्रीय आंदोलन देशव्यापी रूप ले लिया और ये नारा राष्ट्रवाद का मंत्र बन गया बिल्कुल वैसे ही जैसे इंक़लाब ज़िंदाबाद।

वंदे मातरम इस गीत पहली धुन बंगाल के प्रसिद्ध शास्त्रीय संगीतकार जदुनाथ भट्टाचार्य ने तैयार की थी और स्वयं बंकिम चंद्र के चटर्जी समुख गीत का गायन कर प्रस्तुत किया था, यद्यपि मूल धुन अब लुप्त हो चुकी है। कलकत्ता में हुये कांग्रेस अधिवेशन में रवींद्रनाथ टैगोर ने वंदे मातरम गाया था जिसकी धुन उन्होने स्वयं बनाई थी। गीत की बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए, वंदे मातरम को रवींद्रनाथ टैगोर, बाबू सुरेंद्रनाथ बनर्जी, आर.एन. बोस और अन्य की आवाजों में रिकॉर्ड किया। नेताजी सुभाष चंद्र बोस के सुझाव पर, संगीतकार तिमीर बरन भट्टाचार्य ने एक जोशीला संस्करण तैयार किया , जिसे एक युद्ध धुन के रूप में रचा गया था। इस प्रस्तुति को आज़ाद हिंद सेना की परेड के दौरान बजाया जाता था।

पुणे के दिग्गज संगीतकार मास्टर कृष्णराव फुलंबरीकर

ने राग बिलावल और कुछ अन्य रागों में भावपूर्ण प्रस्तुत किया , साथ ही बैंड और कोरस संस्करण भी तैयार किए, जिनका उद्देश्य सामूहिक गायन के माध्यम से इस गीत को लोकप्रिय बनाना था। उनके द्वारा तैयार किए गए एक संस्करण को 1936 के बर्लिन ओलंपिक में भारतीय दल के अनौपचारिक राष्ट्रगान के रूप में बजाया गया था। एक अन्य महान संगीतकार, पंडित ओंकारनाथ ठाकुर, जिन्होंने राग बंगिया काफी में अपना संस्करण रचा था। यह उनका ही संस्करण था जिसे स्वतंत्रता दिवस, 15 अगस्त, 1947 को आकाशवाणी से प्रसारित किया गया था।

आकाशवाणी पर बजने वाला वंदे मातरम का लोकप्रिय वाद्य संस्करण प्रसिद्ध सितार वादक पंडित रवि शंकर द्वारा रचित है। प्रसिद्ध बांसुरी वादक पंडित पन्नालाल घोष ने 'मिया मल्हार' में , वंदे मातरम को एक अलौकिक वाद्य रूप दिया हैं। हिंदुस्तानी संगीत के दिग्गज पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर ने राग काफ़ी में संगीतबद्ध करके इसे अपनी शास्त्रीय प्रतिभा का परिचय दिया। विदुषी मोगुबाई कुर्दिकर द्वारा प्रस्तुत संस्करण में जयपुर घराने की मधुरता की सटीकता को प्रदर्शित किया हैं। पंडित भीमसेन जोशी के अलौकिक राग 'देश' ने पहले से ही मनमोहक गीत में और अधिक सुंदरता जोड़ दी हैं। मराठी संगीतकार विश्वुपंत पागनीस, जो ख्याल और ठुमरी के उस्ताद थे, राग सारंग के माध्यम से वंदे मातरम को एक नया रूप दिया था। पंडित प्रेम कुमार मल्लिक द्वारा ध्रुपद शैली में वंदे मातरम की प्रस्तुति भी बहोत लोकप्रिय और मधुर है।

अन्य उल्लेखनीय संगीतकारों - जिनमें सत्यभूषण गुप्ता, भवानीचरण दास, केशवराव भोले , हेमचंद्र सेन, हरेंद्रनाथ दत्त, जीएम दुर्रानी, वसंत देसाई, मोघुबाई कुर्दिकर, डी वसंता और डी विमला शामिल हैं – जिन्होंने वंदे मातरम को अपनी विशिष्ट शैलियों में प्रस्तुत किया है। दिलीप रॉय एक अन्य कलाकार थे, जिन्होंने बंगाल और असम की लोक और शास्त्रीय धुनों के साथ प्रयोग किया। उनकी प्रस्तुति पूर्वी भारत की भावना और उत्साह से परिपूर्ण थी। गीता दत्त और कोरस द्वारा शुद्ध संस्कृत में प्रस्तुत वंदे मातरम की संगीत रचनाओं में एक विशेष स्थान रखती है ।

वंदे मातरम का सबसे अधिक यादगार संस्कारण तमिल की प्रतिष्ठित गायिका एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी की प्रस्तुति थी, जिसमें बिलावल और बागेश्वरी जैसे रागों का समावेश किया था । वंदे मातरम का तमिल अनुवाद राष्ट्रवादी कवि सुब्रमण्यम भारती ने किया हैं , उन्होंने इसके दो अनुवाद तैयार किए। पहला अनुवाद मूल अर्थ में था, जबकि दूसरा अनुवाद संगीतमय लय और तमिल सांस्कृतिक शैली के अनुरूप था। सुब्रमण्यम भारती ने वंदे मातरम के नाम से भी कुछ गीत लिखे थे, जिनमें से सबसे प्रसिद्ध गीत 1961 में बनी फिल्म कप्पलोत्तिया तमिलन में जी रामनाथन के संगीत में इस्तेमाल किया गया था। गीत के बोल मूल वंदे मातरम की भावना और संवेदनशीलता को दर्शाते हैं । जय वंदे मातरम शीर्षक वाला दूसरा गीत स्वयं भारती द्वारा राग बेहाग, कर्नाटक संगीत में संगीतबद्ध किया गया था। वंदे मातरम की एक अन्य प्रस्तुति जिसे गायक येसुदास द्वारा अपने विशिष्ट गायन शैली के साथ किया गया था, उन्होंने 1979 की मलयालम फिल्म विदरुन्ना मोट्टुकल में वंदे मातरम गाया। येसुदास ने कुछ समय बाद 1980 में, एक बार फिर एक गीत गाया जिसकी शुरुआत वंदे मातरम से होती हैं। मशहूर शास्त्रीय गायिका संगीता कट्टी कुलकर्णी ने वंदे मातरम का एक संस्कारण गाया है, जो उनकी विशिष्ट शैली में हैं।

संगीतकार ए.आर.रहमान का 'माँ तुझे सलाम' एल्बम का 'वंदे मातरम' का शीर्षक गीत युवाओं के बीच अत्यंत लोकप्रिय है। ये संस्करण एक अलग बोलों के साथ प्रस्तुत किया , जिसमें शास्त्रीय संगीत को आधुनिक संगीत के साथ जोड़ा गया था । श्रेया घोषाल द्वारा गाया गया वंदे मातरम के संस्कारण का संगीत निर्देशन अप्पा वाधवाकर ने किया है। सूफी गायक कैलाश खेर द्वारा गाया गाना "हमसे बेहतर हम, बोलो 'वंदे मातरम',आत्मनिर्भर हम, बोलो 'वंदे मातरम' " भी कमाल का बन पड़ा हैं। वंदे मातरम की खूबसूरती यही है कि इसे अनेक वाद्ययंत्रों द्वारा आसानी से प्रस्तुत किया जा सकता है। प्रतिभाशाली मायलाई एम कार्तिकेयन द्वारा नादस्वरम कॉन्सर्ट में वाद्ययंत्र पर प्रस्तुत किया गया वंदे मातरम इसका एक सुंदर उदाहरण है। हाल ही के कुछ वर्षों में वंदे मातरम को अनुराधा पौडवाल, साधना सरगम, के.एस. चित्रा, जसपिंदर नरूला, हेमा सरदेसाई, महालक्ष्मी

अय्यर, सुरेश वाडकर, अभिजीत भट्टाचार्य, शान और कैलाश खैर आदि गायकों ने इस गीत को गाया है। इसके अलावा सोनू निगम, शंकर महादेवन और हरिहरण जैसे कलाकारों ने भी इसके विभिन्न फ्यूजन और अन्य संस्करण गाए हैं।

भारतीय सिनेमा में, वंदे मातरम अक्सर एक भावनात्मक चिंगारी का काम करता है और इसके शुरुआती शब्द ही देशभक्ति की भावना को जगाने के लिए काफी होते हैं। फिल्मकार "वंदे मातरम" वाक्यांश को बलिदान और राष्ट्रवाद के प्रतीक के रूप में इस्तेमाल करते हैं। भले ही धुन या बोल मूल गीत से अलग हों, फिर भी वंदे मातरम के ये दो शब्द वही ऊर्जा बिखेरते हैं। अधिकतर गीत केवल शुरुआत में वंदे मातरम शब्दों का प्रयोग करते हैं और इसके अंतर्निहित जादू का लाभ उठाते हैं।

इस गीत का पहला प्रयोग बंगाली फिल्म वंदे मातरम (1935) में हुआ था। दक्षिण भारत में इस शीर्षक से बनने वाली पहली फिल्म तेलुगु फिल्म वंदे मातरम (1939) थी। मराठी सिनेमा में, पी. एल. देशपांडे अभिनीत फिल्म वंदे मातरम (1948) में वेद मंत्रहुं वंदे वंदे मातरम गाना था , जो एक देशभक्तिपूर्ण गीत था, जिसका संगीत सुधीर फड़के ने दिया था। इस गीत का सबसे प्रसिद्ध फिल्मी संस्करण 'आनंदमठ' (1952) फिल्म का है ,जिसका संगीत निर्देशक हेमंत कुमार ने कीया हैं , जिसमें उन्होने एक प्रेरणादायक गीत तैयार किया गया, जो आज भी एक कालातीत देशभक्ति गीत के रूप में गूंजता है। जो आज भी दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देता है। फिल्म 'जागृति' (1954) के लिए कवि प्रदीप द्वारा रचित गीतरचना "आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं झांकी हिंदुस्तान की, वंदे मातरम " ने देश के गौरव और बलिदान को अमर कर दिया। ऐसा कोई भी राष्ट्रीय पर्व नहीं होता हैं जिस दिन ये गाना नहीं बजता हैं।

लगे रहो मुन्ना भाई फिल्म का "गीत बन्दे में था दम, वन्दे मातरम" भी काफी लोकप्रिय हुआ था, जिसे शान्तनु मोइत्रा के संगीत निर्देशन में सोनू निगम और श्रेया घोषाल ने अपनी आवाज दी हैं। एबीसीडी-2 में सचिन जिगर का गीत हैं इक तेरा नाम है साचा हो। फिल्म फाइटर (2024) का देशभक्त गीत "वंदे मातरम" है, जिसे 'द फाइटर एंथम' भी कहा जाता है, जो भारतीय वायु सेना के शौर्य और देश के प्रति उनके समर्पण को दर्शाता है। इसे संगीतकार विशाल-शेखर द्वारा बनाया गया हैं। हिंदी कलाकार टाइगर श्रॉफ ने 'वंदे मातरम' नाम से एक देशभक्ति गीत गाया है, जो भारतीय सेना और देश के प्रति सम्मान को दर्शाता है, यह गाना संगीत कर विशाल मिश्रा द्वारा रचित है , जिसे सैन्य कर्मियों (2021) के लिए एक श्रद्धांजलि के रूप में पेश किया गया हैं।

डेढ़ सौ वर्षों के बाद भी, वंदे मातरम एक गीत मात्र नहीं, बल्कि एक विशाल संगीत परंपरा बनकर रह गई है। यह बहुआयामी और प्रेममय है। राग मल्हार से लेकर काफ़ी, देश और सहज गायन तक, महलों से लेकर स्टूडियो तक, इसकी आवाज़ हर युग के अनुरूप ढलती रही है, जबकि इसकी धड़कन अटल बनी हुई है। इसकी सच्ची विजय इस बात में नहीं है कि इसे पुराने गायक और नए युवा गायकों ने गाया हैं , बल्कि इस बात में है कि इसे हर किसी ने गाया है और आगे भी गाते रहेंगे ।यह गीत हमेशा ही राष्ट्र की गूंज बना रहेगा है।

यह गीत आज भी प्रासंगिक है और यह गीत समय की सीमा से परे है। वंदे मातरम् आज भी धमनियों में ऊर्जा पैदा करता है। इस गीत में निहित भावनाएं इतनी गहन हैं कि हर भारतीय के हृदय को स्पंदित करता है। 'सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्' जैसे शब्द भारत की प्राकृतिक सुंदरता और समृद्धि को दर्शाते हैं।

आज भी वंदे मातरम हमें नई प्रेरणा देता है और देशवासियों को नई ऊर्जा से भर देता है। 'वंदे मातरम एक शब्द है, एक मंत्र है, एक ऊर्जा है, एक स्वप्न है, एक संकल्प है।'वंदे मातरम' राष्ट्रवाद और एकता का स्वर हैं, 'वंदे मातरम' को राष्ट्रीय गौरव और देश के प्रति समर्पण के प्रतीक के रूप में देखा जाता है ।'वंदे मातरम' वर्तमान की उपलब्धियों और भविष्य की आकांक्षाओं का भी प्रतीक है। यह गीत आधुनिक भारत में एकता ,राष्ट्रवाद और सांस्कृतिक आत्म-जागरूकता को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहेगा और एक प्रेरणास्रोत बना रहेगा। 'वंदे मातरम' निरंतर प्रेरणा तथा भविष्य के युवाओं, वैज्ञानिकों और सेना के जवानों को प्रेरित करते हुये राष्ट्रीय गौरव का उद्घोष बना रहेगा।

राजभाषा हिंदी और वंदे मातरम : राष्ट्रीय एकता के दो सशक्त स्तम्भ

कामिनी गुप्ता
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
एमएसटीसी लिमिटेड, कोलकाता

भारत के भौगोलिक, भाषाई, सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक विविधताओं के इन्द्रधनुषी रंग में अन्तर्निहित सौन्दर्य को उद्घाटित करने के लिए राष्ट्रीय एकता की भावना अत्यंत महत्वपूर्ण है । राष्ट्रीय एकता की भावना को अभिव्यक्ति प्रदान करने और भावना को दृढ़ बनाने में राजभाषा हिंदी और राष्ट्रगीत 'वन्दे मातरम्' की भूमिका अद्वितीय है। एक तरफ हिंदी सम्पूर्ण देश को एक धागे में पिरोने के लिए राष्ट्रीय एकता का संवाहक का कार्य करती है, तो दूसरी तरफ वन्दे मातरम् देशवासियों में राष्ट्रीय भावना को प्रबल करता है । ये दोनों ही राष्ट्रीय एकता के सशक्त आधार हैं, जो भाषाई विविधता के बीच सामंजस्य स्थापित करते हैं। आज 150 साल बाद भी वन्दे मातरम् की भावना समृद्ध भारत के स्वप्न को पोषित कर रही है ।

राष्ट्रीय एकता में राजभाषा हिंदी और 'वन्दे मातरम्' की संयुक्त भूमिका: स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी भाषा न केवल जन-जागरण का सशक्त साधन बनी, बल्कि विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को एक सूत्र में बाँधने वाली संपर्क भाषा के रूप में उभरी। गांधीजी ने 'नवजीवन' और 'यंग इंडिया' में हिंदी का प्रयोग कर जनता तक संदेश पहुँचाया। 1905 के बंगाल विभाजन विरोध में हिंदी ने स्वदेशी आंदोलन को मजबूती दी। इतना ही नहीं देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में हिंदी के गीतों एवं नारों की अहम भूमिका रही है। अहिंदी भाषी प्रान्तों के अनेक मनीषियों ने इन हिंदी गीतों एवं नारों को अपनाया। चाहे वंशीधर शुक्ला की 'कदम कदम बढ़ाये जा' या रामप्रसाद बिस्मिल की 'सरफरोशी की तमन्ना' हो, या श्यामलाल गुप्ता का 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा' का जागरण मंत्र हो या फिर बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय की 'वन्दे मातरम' यह सब हिंदी के माध्यम से ही जनमानस में प्रचारित किया गया। 'वंदे मातरम्' वे अंतिम शब्द थे, जो खुदीराम बोस, अशफाकउल्ला, रामप्रसाद बिस्मिल , मदन लाल ढींगरा और कई अन्य शहीदों ने फांसी पर चढ़ने से पहले कहे। हिंदी की प्रसिद्धि को देखते हुए बहुभाषी भारतवर्ष में एकता की भावना को दृढ़ करने के लिए हिंदी भाषा ही सर्व समर्थ है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व जिन महापुरुषों ने हिंदी की स्वतंत्र भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में परिकल्पना की थी, उनमें बंगाल के नेताजी सुभाषचन्द्र बोस भी शामिल थे जिन्होंने कलकत्ता कांग्रेस का अध्यक्षीय भाषण हिंदी में पढ़ते हुए कहा था- " हिंदी प्रचार का उद्देश्य किसी भी प्रान्तीय भाषा को हानि न पहुँचाते हुए केवल यह है कि आजकल जो काम अंग्रेजी से किया जाता है, वह आगे चलकर हिंदी में किया जा सकता है।" इसी क्रम में वंदे मातरम् भारत में उभरते राष्ट्रवाद की भावना का सशक्त उद्घोष बनकर सामने आया। वंदे मातरम् की भावना को देश के कोने कोने के पहुचने के लिए रवींद्रनाथ टैगोर ने हिंदी में , महान सुब्रमण्य भारती ने तमिल में और अरविंदो घोष ने अंग्रेज़ी अनुवाद किया। वर्ष 1896 में गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में पहली बार "वंदे मातरम्" का गायन किया। 7 अगस्त, 1905 कलकत्ता के

टाउन हॉल में विद्यार्थियों के जुलूसों के दौरान "वंदे मातरम्" का पहली बार राजनीतिक नारे के रूप में प्रयोग हुआ। यही घटना बंगाल में स्वदेशी आंदोलन और बंगाल विभाजन-विरोधी आंदोलन की प्रेरणा बनी। वर्ष 1907 मैडम भीकाजी कामा ने जर्मनी के स्टटगार्ट (बर्लिन में आयोजित सम्मेलन) में भारत के बाहर पहली बार तिरंगा झंडा फहराया। इस ऐतिहासिक ध्वज पर "वंदे मातरम्" अंकित था, जो भारत की स्वतंत्रता की आकांक्षा का प्रतीक बना। वर्ष 1909 पेरिस में रहने वाले भारतीय देशभक्तों ने जिनेवा से "वंदे मातरम्" नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया। यह पत्रिका विदेशों में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की आवाज़ बनी।

वर्तमान परिदृश्य में .....

वंदे मातरम... जिसने भारत को स्वावलंबन का रास्ता दिखाया, वंदे मातरम... जिसने देश की आजादी के आंदोलन को ऊर्जा और प्रेरणा दी, वंदे मातरम... जो विदेशी कंपनियों को चुनौती देने का मंत्र बना, वंदे मातरम... जिसने उस विचार को पुनर्जीवित किया जो हजारों वर्षों से भारत की रग-रग में बसा था। आज हम वंदे मातरम की संकल्पना को पूरा करने की ओर अग्रसर है । भारत अपनी भाषाई विरासत और संस्कृति को बचाते हुए वैश्विक अर्थव्ययस्था के चौथे पायदान पर है । रिस्पॉन्सिबल नेशंस इंडेक्स (आरएनआई) 2026 में भारत 154 देशों में 16वें स्थान पर है, जो नागरिकों, पर्यावरण और वैश्विक जिम्मेदारियों के प्रति मजबूत प्रतिबद्धता दर्शाता है । जलवायु परिवर्तन प्रदर्शन सूचकांक 2025 में भारत 10वें स्थान पर रहा, जो ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन और नवीकरणीय ऊर्जा में प्रगति दर्शाता है। ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स (जीआईआई) 2025 में भारत 139 देशों में 38वें स्थान पर है । आज भारत भाषाई और संस्कृति की अनेकता में एकता की अवधारणा लिए वैश्विक पटल पर ध्रुव तारे की भांति चमक रहा है ।

भाषाई एकता के संदर्भ में हिंदी प्रशासन और जनता के बीच अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं है बल्कि विश्व पटल पर भारत का प्रतिनिधित्व करती है । वर्तमान में हिंदी भारत के लोकतंत्र की नींव बन गई है । आज प्रधानमंत्री आवास योजना, उज्ज्वला योजना, आयुष्मान भारत, किसान सम्मान निधि जैसी योजनाओं की संपूर्ण जानकारी हिंदी में उपलब्ध होने के कारण ग्रामीण और वंचित वर्ग से सीधे जुड़ते हैं, इससे सुशासन को बल मिलता है। केवल इतना ही नहीं हिंदी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं को भी महत्व दिया जा रहा है । उच्चतम न्यायालय के लगभग 73000 निर्णय हिंदी और भारतीय भाषाओ में पोर्टल पर उपलब्ध है। "भाषिणी" राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन भारतीय भाषाओं को तकनीक से जोड़ने की ऐतिहासिक पहल है। नई शिक्षा नीति 2020 में भारतीय भाषाओं को आगे बढ़ने का मूल मंत्र चुना गया है। आज हिंदी में इंजीनियरिंग, चिकित्सा, प्रबंधन और विज्ञान से संबंधित पाठ्यक्रमों का विकास भारत की समृद्धि की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

निष्कर्षतः राजभाषा हिंदी और वंदे मातरम् भारत की राष्ट्रीय एकता के दो ऐसे सशक्त स्तंभ हैं, जिनके बिना विकसित राष्ट्र की संकल्पना अधूरी है। हिंदी राष्ट्र को संवाद देती है और "वंदे मातरम्" उसे आत्मा प्रदान करता है। जब हिंदी में "वंदे मातरम्" गूंजता है, तब केवल शब्द नहीं, बल्कि भारत की आत्मा बोलती है-एक ऐसी आत्मा, जो प्रेम, सहिष्णुता और एकता से परिपूर्ण है।

वंदे मातरम् !

जय हिंदी !

जय भारत !

संदर्भ : 1. वंदे मातरम् का इतिहास -विश्वनाथ मुखर्जी (प्रकाशन: सरस्वती विहार, 1979)

2. राजभाषा भारती, दिसंबर 2023, पृष्ठ-78

3. संसद टीवी पर प्रधानमंत्री की लोकसभा में वंदे मातरम् पर विशेष चर्चा

3. https://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/prelims-facts/150th-anniversary-of-india-s-national-song-vande-mataram-

मधुसूदन मुर्मु
प्रबंधक
भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड

वंदे मातरम् के 150 वर्ष

वंदे मातरम् गीत के 150 वर्षगाँठ की हार्दिक अभिनन्दन और इनके रचयिता को तहे दिल से कोटि-कोटि नमन। 'वंदे मातरम्' में "वंदे" का अर्थ है 'प्रणाम करना', और "मातरम्" का अर्थ है 'माँ'। वंदे मातरम् गीत का मतलब "हे माँ, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ"।

यह गीत, हमारी मातृभूमि 'भारत' को माँ के रूप में देखता है उसकी रंग-विरंगी छल-छल करती नदियाँ, हरियाली पर्वतें, खेत- खलिहान, शस्य-श्यामला भूमि और सौंदर्य का वर्णन और विभिन्न संस्कृति को देवी के रूप में पूजता है। 19वीं शताब्दी 1875-76 में भारत ब्रिटिश शासन के अधीन था। उस समय भारतीय समाज में राष्ट्रवाद की भावना धीरे-धीरे उभर रही थी। बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, जो स्वयं ब्रिटिश प्रशासन में कार्यरत थे, भारतीयों की दासता और अपमान को गहराई से महसूस करते थे। बंकिमचंद्र ने 150 वर्ष पहले ब्रिटिश शासन के अधीन भारत की स्थिति को बहुत करीब से देखा था, जिससे उनके मन में हर घड़ी राष्ट्रवाद की भावना जाग रही थी। जब वह 37 बर्ष के थे, समय 7 नवंबर 1875, बंगाल की धार्मिक-सांस्कृतिक परंपरा के अन्तर्गत मनाई जा रही दुर्गा पूजा के अक्षय नवमी का दिन, नैहाटी नामक स्थान पर, जिला- उत्तर 24 परगना, बंगाल - कांठलपाड़ा गाँव में एक आम के पेड़ के नीचे बैठे हुए, मातृभूमि "भारत" माँ की सोच में संस्कृतनिष्ठ बांग्ला भाषा में उनके मन मे सिर्फ छह पदों का शब्द आया "वंदे मातरम्", उसे एक कागज में लिख डाले। उस दुर्गा पूजा और जगद्धात्री पूजा की सांस्कृतिक भावना से प्रेरित होकर उन्होंने मातृभूमि को देवी के रूप में चित्रित करते हुए यह गीत रचा। वंदे मातरम् का मतलब केवल शब्दों का अनुवाद ही नहीं, बल्कि भारत माता के प्रति श्रद्धा, प्रेम और बलिदान की भी भावना है। यह गीत हमें याद दिलाता है कि हमारी मातृभूमि केवल भूमि नहीं, बल्कि हमारी आत्मा है।

उनका मुख्य उद्देश्य था –

- भारतीयों को यह याद दिलाना कि उनकी भूमि केवल भौगोलिक क्षेत्र नहीं, बल्कि "माँ" है।
- स्वतंत्रता संग्राम 1857 से 1947 के अवधि के लिए भारतीयों के प्रति भावनात्मक और सांस्कृतिक आधार तैयार करना।
- लोगों के चरित्र में आत्मगौरव और त्याग की भावना को जगाना।

यह गीत पहली बार उनके ही बांग्ला मासिक साहित्यिक पत्रिका "बंगदर्शन" सन् 1872 में प्रकाशित हुआ और बाद में बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने सन् 1882 में एक राष्ट्रवादी उपन्यास "आनंदमठ" में प्रकाशित करना आरम्भ किया। विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इस गीत को 1896 में कांग्रेस अधिवेशन में सार्वजनिक रूप से गाया। स्वतंत्रता

संग्राम के दौरान यह गीत क्रांतिकारियों और जन आंदोलनों का नारा बना। स्वतंत्र भारत में इसे राष्ट्रीय गीत का दर्जा दिया गया, जबकि जन गण मन को राष्ट्रीय गान। वंदे मातरम् के 150 वर्ष केवल एक गीत की वर्षगांठ नहीं, बल्कि भारत की स्वतंत्रता, संस्कृति और एकता की सामूहिक चेतना का उत्सव है। यह अवसर युवा पीढ़ियों के साथ-साथ अनेक राष्ट्र- प्रेमियों को अपने इतिहास से जोड़ने और राष्ट्रभक्ति को नए रूप में जीने का अवसर देता है। भारत की संविधान सभा ने 24 जनवरी 1950 को "वंदे मातरम्" को राष्ट्रीय गीत का दर्जा दिया और उसी दिन ही “जन गण मन” को राष्ट्रगान घोषित किया गया। भारतीय संविधान में स्पष्ट किया गया कि जन गण मन आधिकारिक राष्ट्रगान होगा और वंदे मातरम् राष्ट्रीय गीत के रूप में समान सम्मान पाएगा।

- पिछले 26 जनवरी 2025 77वें गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर, वंदे मातरम की थीम "रिपब्लिक डे 2025” रखी गई।
- भारत सरकार ने राष्ट्रीय पहल के तहत, नवंबर 2025 से वंदे मातरम के 150 वर्ष पूरे होने पर वर्षभर चलने वाले समारोह को शुरू किए।
- आधिकारिक पोर्टल Vande Mataram 150.in पर जन भागीदारी के तहत नागरिकों को अपना वंदे मातरम गीत गाकर वीडियो अपलोड करने और प्रमाणपत्र प्राप्त करने का अवसर दिया गया।
- महाराष्ट्र के डोंबिवली में सांस्कृतिक आयोजन के तहत, 2.5 लाख दीयों से भारत माता की विशाल मोज़ेक (जो रंगीन काँच, पत्थर, टाइल्स और अन्य छोटे-छोटे टुकड़े से बनी थी) बनाई गई, जिसने विश्व रिकॉर्ड बनाया।
- वंदे मातरम् केवल एक गीत नहीं, बल्कि यह भारत माता के प्रति हमारी अटूट श्रद्धा और समर्पण का प्रतीक है।
- यह गीत हमें स्वतंत्रता संग्राम के उन वीरों की याद दिलाता है जिन्होंने मातृभूमि के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया।
- वंदे मातरम् ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हर भारतीय के हृदय में जोश और आत्मविश्वास जगाया। आज भी यह गीत हमें विकसित भारत की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है।
- यह गीत हमें एकता, त्याग और मातृभूमि के प्रति प्रेम का संदेश देता है, जो 2047 तक विकसित भारत के संकल्प को मजबूत करता है।

आनेवाले भविष्य में अनुमानित और वर्तमान परिदृश्य के आधार पर वंदे मातरम् की भारत के प्रति भूमिका को कुछ बिंदुओं को इसतरह दी जा सकती है:

1. सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक: वंदे मातरम् भारत की सांस्कृतिक और साहित्यिक धरोहर का हिस्सा बना रहेगा। यह गीत भारतीयों को उनकी जड़ों और परंपराओं से जोड़ता है और जोड़ता रहेगा।

2. देशभक्ति की प्रेरणा: स्वतंत्रता संग्राम में जैसे बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने लोगों को एकजुट किया था, वैसे ही भविष्य में भी यह गीत युवाओं को देशभक्ति और राष्ट्र- निर्माण के लिए प्रेरित करेगा। राष्ट्रीय पर्वों और समारोहों में इसकी गूंज हमेशा बनी रहेगी।

3. शैक्षिक और ऐतिहासिक महत्व: स्कूलों और विश्वविद्यालयों में इसे इतिहास और साहित्य के हिस्से के रूप में पढ़ाया जाता रहेगा। नई पीढ़ी को यह बताएगा कि स्वतंत्रता संग्राम में भावनात्मक और सांस्कृतिक शक्ति कितनी महत्वपूर्ण थी।

4. एकता और विविधता का संदेश: भारत की विविधता में एकता को दर्शाने वाला गीत बना रहेगा। भविष्य में भी यह विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों और समुदायों को जोड़ने का माध्यम बना रहेगा

5. वैश्विक पहचान: जैसे 'जन गण मन' भारत का राष्ट्रगान है, वैसे ही 'वंदे मातरम्' भारत की वैश्विक पहचान का हिस्सा रहेगा। विदेशों में भारतीय समुदाय इसे अपनी मातृभूमिसे जुड़ाव के प्रतीक के रूप में गाते रहेंगे।

तरुण दत्ता
अधिकारी लेखा
ब्रिज एण्ड रुफ कंपनी
इंडिया लिमिटेड

राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम्' के 150 वर्ष

'वंदे मातरम' के 150 वर्ष पूरे होने का उत्सव 7 नवंबर, 2025 को शुरू हुआ, जब प्रधानमंत्री जी ने नई दिल्ली में एक वर्ष तक चलने वाले समारोहों का उद्घाटन किया, जिसमें भारत के इस ऐतिहासिक राष्ट्रीय गीत की रचना के 150 साल पूरे होने का जश्न मनाया गया, जिसे बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने 1875 में रचा था और इसने स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, जिसे देशव्यापी कार्यक्रमों और विशेष डाक टिकट व सिक्के के विमोचन के साथ मनाया गया।

रचना और प्रकाशन: बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने यह गीत लिखा, जिसे पहले 1875 में बंगाली पत्रिका 'बगदर्शना में प्रकाशित किया गया। शुरू में वंदे मातरम की रचना स्वतंत्र रूप से की गई थी और बाद में इसे बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास "आनंदमठ" (1882 में प्रकाशित) में शामिल किया गया।

राष्ट्रीय महत्व: यह गीत स्वतंत्रता संग्राम के दौरान लाखों भारतीयों को प्रेरित करने वाला राष्ट्रवाद का प्रतीक बन गया और 1950 में संविधान सभा ने इसे भारत के राष्ट्रीय गीत के रूप में अपनाया। इसे पहली बार 1896 में कलकता में कांग्रेस अधिवेशन में रवींद्रनाथ टैगोर ने गाया था। राजनीतिक नारे के तौर पर पहली बार वंदे मातरम का इस्तेमाल 7 अगस्त 1905 को किया गया था।

पुनरुत्थानबादी राष्ट्रबादू के लिए युद्धघोष : "वदे मातरम" गीत भारत के स्वाधीनता संग्राम का प्रतीक बन गया, जो स्व-शासन की सामूहिक इच्छा तथा लोगों और उनकी मातृभूमि के बीच भावनात्मक जुड़ाव को समाहित करता है। यह गीत शुरू में स्वदेशी और विभाजन विरोधी आआंदोलनों के दौरान लोकप्रिय हुआ और जल्द ही क्षेत्रीय सीमाओं को पार करके राष्ट्रीय जागरण का गान बन गया। बगाल की सडको से लेकर बॉम्बे के दिल और पंजाब के मैदानों तक, "वंदे मातरम" की गूंज औपनिवेशिक शासन के खिलाफ प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में सुनाई देने लगी। इसे गाने पर रोक लगाने की ब्रिटिश कोशिशों ने इसके देशभक्ति से जुड़े महत्व को और बढ़ा दिया, और इसे एक ऐसी नैतिक शक्ति में बदल दिया जिसने जाति, धर्म और आषा की परवाह किए बिना लोगों को एकजुट किया। नेताओं, अनी और कांतिकारियों ने इसके छंदों से प्रेरणा ली, और इसे राजनीतिक समाओं, प्रदर्शनी और जेल जाने से पहले गाया जाने लगा। इस रचना ने न केवल विरोध के कामों को प्रेरित किया, बल्कि आंदोलन में सास्कृतिक गौरव और आध्यात्मिक जोश भी भरा, जिससे भारत के स्वाधीनता संग्राम की राह के लिए भावनात्मक आधार तैयार हुआ।

उन्नीसवी सदी के आखिर और बीसवीं सदी की शुरुआत में "वंदे मातरम" बढ़ते भारतीय राष्ट्रवाद का नारा बन गया।

एक वर्ष लंबे स्मरणोत्सव के उद्घाटन अवसर पर प्रधानमंत्री के संबोधन का आरंभिक 'अंश'

"वंदे मातरम, ये शब्द एक मंत्र है, एक ऊर्जा है, एक स्वप्न है, एक संकल्प है। वंदे मातरम, ये एक शब्द मां भारती की साधना है, मां भारती की आराधना है। वंदे मातरम, ये एक शब्द हमें इतिहास में ले जाता है। ये हमारे आत्मविश्वास को, हमारे वर्तमान को, आत्मविश्वास से भर देता है, और हमारे भविष्य को ये नया हौंसला देता है कि ऐसा कोई संकल्प नहीं, ऐसा कोई संकल्प नहीं जिसकी सिद्धि न हो सके। ऐसा कोई लक्ष्य नहीं, जो हम भारतवासी पा ना सकें।"

निष्कर्ष : वंदे मातरम के 150 साल पूरे होने का यह जश्न भारत की राष्ट्रीय पहचान के विकास में इस गीत के गहरे ऐतिहासिक और सास्कृतिक महत्व को दिखाता है। उन्नीसवीं

सदी के आखिर के बौद्धिक और साहित्यिक माहौल से निकला वंदे मातरम अपनी साहित्यिक जड़ों से आगे बटकर उपनिवेशवाद विरोधी प्रतिरोध और सामूहिक आकांक्षा का शक्तिशाली प्रतीक बन गया। यह आयोजन न केवल बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय के दूरदर्शिता की स्थायी प्रासंगिकता की पुष्टि करता है, बल्कि आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद, एकता और सांस्कृतिक आत्म-जागरुकता के विमर्श को आकार देने में इस गीत की भूमिका के बारे में नए सिरे से सोचने के लिए भी प्रेरित करता है।

ये है पूरा गीत :-

बन्दे मातरम्।
सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम,
शस्यश्यामलां मातरम्। वन्दे मातरम् ॥'
'शुभज्योत्स्ना पुनकित यामिनीम्,
फुल्लकुसुमित दुमदनशोझिनीम,
सुहासिनी सुमधुर भाषिणीम्, सुखदाम् बरदाम्
मातरम्। वन्दे मातरम् ॥
कोटि-कोटि कण्ठ कल-कल निनाद कराले,
कोटि-कोटि भुजैर्धृत खरकरवाले,
के बॉले मां तुमि अबले,
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीम्,
रिपुदलवारिणीं मातरम्। वन्दे मातरम्।
तुमि विद्या तुमि धर्म,
तुमि हृदि तुमि मर्म,
त्वम् हि प्राणाः शरीरे,
बाहुते तुमि मां शक्ति,
हृदये तुमि मां भक्ति,
तोमारेई प्रतिमा गड़ि मन्दिरे-मन्दिरे। वन्दे मातरम् ।
त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी,
कमला कमलदलविहारिणी,
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्,
नमामि कमलाम् अमलाम् अतुलाम्,
सुजलां सुफलां मातरम्। वन्दे मातरम्।
श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्,
धरणीम् भरणीम् मातरम्। वन्दे मातरम्।

राजेश साव
प्रबंधक (राजभाषा)
कोल इण्डिया लिमिटेड

महुआ का फूल

सुबह की पहली साँस में,
महुआ का पेड़ कुछ कहता है-
न शब्दों में, न स्वर में,
बस गिरते फूलों की चुप्पी में ।
कोई स्मृति, कोई गीत,
फूलों के गिरने में बुनता है।

पेड़ कुछ नहीं कहता,
पर उसकी शाखाएं जानती हैं,
कितनी बार गिरा है प्रेम,
कितनी बार उठी हैं कहानियाँ।
हर गिरता हुआ महुआ
एक पल की तरह लगता है —
जो बीत गया,
पर मिटा नहीं।

महुआ के फूलों की गंध में
दादी की हँसी गूँजती है,
मिट्टी की गोद में
बचपन की दौड़ सिमटती है।
दादी की टोकरी अब भी वहीं है,
बूढ़े हाथों में स्नेह की थकन है।
वो फूल नहीं चुनती —
वो समय चुनती है,
जो हर सुबह फिर गिरता है
महुआ की साँसों में।

वंदे मातरम् : 150 वर्षों की अमर यात्रा

विशाल
प्रबंधक (आंतरिक लेखापरीक्षा)
ब्रिज एण्ड रुफ कंपनी इंडिया लिमिटेड

भारत की आत्मा केवल उसकी भौगोलिक सीमाओं में नहीं, बल्कि उसकी सांस्कृतिक चेतना, ऐतिहासिक स्मृति और राष्ट्रीय भावनाओं में निवास करती है। जिस प्रकार किसी राष्ट्र की पहचान उसके प्रतीकों, आदर्शों और विचारों से निर्मित होती है, उसी प्रकार भारत की राष्ट्रीय चेतना का एक अत्यंत पवित्र, प्रेरक और अमर प्रतीक है- "वंदे मातरम्"। यह केवल दो शब्दों का उच्चारण नहीं, बल्कि मातृभूमि के प्रति समर्पण, त्याग, संघर्ष और स्वाभिमान का शाश्वत घोष है। वर्ष 2026 के आसपास "वंदे मातरम्" अपने 150 गौरवशाली वर्षों की ऐतिहासिक यात्रा पूर्ण कर रहा है। यह अवसर केवल स्मरण का नहीं, बल्कि आत्ममंथन और पुनः संकल्प का भी है।

"वंदे मातरम्" का शाब्दिक अर्थ है- "मैं मातृभूमि को नमन करता हूँ"। परंतु इसके भावार्थ की परिधि अत्यंत व्यापक है। इसमें भूमि के प्रति प्रेम है, संस्कृति के प्रति निष्ठा है, जननी के प्रति कृतज्ञता है और राष्ट्र के प्रति सर्वस्व अर्पण करने की भावना निहित है। यह उद्घोष उस समय जन्मा, जब भारत राजनीतिक दासता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था, और उसे आवश्यकता थी एक ऐसे मंत्र की, जो सुप्त चेतना को जागृत कर सके, भय को साहस में बदल सके और बिखरी हुई जनता को एक सूत्र में बाँध सके।

"वंदे मातरम्" की रचना का श्रेय जाता है बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय को बंगाल के उस महान साहित्यकार को, जिन्होंने कलम को तलवार बना दिया। उन्होंने यह गीत 1870 के दशक में संस्कृतनिष्ठ बांग्ला भाषा में रचा और बाद में इसे अपने कालजयी उपन्यास 'आनंदमठ' (1882) में सम्मिलित किया। आनंदमठ का कथानक संन्यासी विद्रोह और विदेशी सत्ता के विरुद्ध संघर्ष की पृष्ठभूमि पर आधारित था। इसी उपन्यास में "वंदे मातरम्" एक गीत के रूप में प्रकट हुआ, जिसने धीरे-धीरे संपूर्ण भारत को आंदोलित कर दिया।

उस समय भारत की जनता सामाजिक, धार्मिक और भाषाई विविधताओं में विभक्त थी। अंग्रेजी शासन की 'फूट डालो और राज करो' की नीति ने इन विभाजनों को और गहरा किया था। ऐसे में "वंदे मातरम्" एक सेतु बनकर उभरा - एक ऐसा भावनात्मक सूत्र, जिसने बंगाल से पंजाब, महाराष्ट्र से मद्रास और असम से राजस्थान तक एक समान कंपन उत्पन्न किया। यह गीत किसी एक प्रांत, भाषा या धर्म का नहीं रहा; यह संपूर्ण भारत का उद्घोष बन गया।

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में जब स्वतंत्रता आंदोलन ने व्यापक जनाधार प्राप्त करना शुरू किया, तब "वंदे मातरम्" उसका प्राणतत्त्व बन गया। 1905 का बंग-भंग आंदोलन इस गीत के प्रभाव का जीवंत उदाहरण है। जब अंग्रेजों ने बंगाल को विभाजित करने का षड्यंत्र रचा, तब जनसाधारण ने "वंदे मातरम्" को अपना युद्धघोष बनाया। सड़कों पर, सभाओं में, विद्यालयों में और यहां तक कि जेल की कोठरियों में भी यही शब्द गूँजता रहा।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने कहा था- "वंदे मातरम् केवल गीत नहीं, यह भारतीय स्वतंत्रता का घोषणापत्र है।"लाला लाजपत राय, बिपिन चंद्र पाल और अरविंद घोष जैसे नेताओं ने इस गीत को राष्ट्रीय चेतना का केंद्र बनाया। अरविंद घोष ने इसे "भारत माता की जीवित वाणी" कहा। उनके शब्दों में, "जब वंदे मातरम् का उच्चारण होता है, तो ऐसा प्रतीत होता है मानो भारत

स्वयं बोल उठा हो।" महात्मा गांधी, जो समावेशिता और अहिंसा के प्रतीक थे, उन्होंने भी "वंदे मातरम्" के भावात्मक पक्ष को स्वीकार किया। गांधीजी का मत था कि यह गीत मातृभूमि के प्रति भक्ति को जागृत करता है, परंतु उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि राष्ट्रगान और राष्ट्रगीत के विषय में किसी प्रकार का विभाजन नहीं होना चाहिए। इसी संतुलित दृष्टिकोण के कारण स्वतंत्र भारत में "जन गण मन' को राष्ट्रगान और "वंदे मातरम्" को राष्ट्रगीत का सम्मान प्रदान किया गया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात 24 जनवरी 1950 को संविधान सभा ने सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया कि "वंदे मातरम्" को राष्ट्रगीत के रूप में वही आदर और सम्मान प्राप्त होगा, जो राष्ट्रगान को है। यह निर्णय केवल संवैधानिक नहीं था, बल्कि ऐतिहासिक संघर्षों के प्रति कृतज्ञता का प्रतीक था। "वंदे मातरम्" की विशेषता केवल उसका ऐतिहासिक योगदान नहीं, बल्कि उसका साहित्यिक और सांस्कृतिक सौंदर्य भी है। गीत में भारत की भूमि को सजीव, करुणामयी और दिव्य माता के रूप में चित्रित किया गया है-सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्, शस्यश्यामलां मातरम्...

यह पंक्तियाँ केवल प्रकृति का वर्णन नहीं करतीं, बल्कि उस समृद्धि, उर्वरता और सौंदर्य का बोध कराती हैं, जो भारत की आत्मा में निहित है। यहाँ मातृभूमि देवी है, अन्नपूर्णा है, शक्ति है और करुणा है।

150 वर्षों की यात्रा में "वंदे मातरम्" ने अनेक उतार-चढ़ाव देखे। कभी यह प्रतिबंधित हुआ, कभी इसे गाने पर लाठियाँ पड़ीं, कभी इसे लेकर वैचारिक विवाद भी उत्पन्न हुए। परंतु हर विरोध, हर विवाद के बाद यह और अधिक सशक्त होकर उभरा। इसका कारण यह है कि "वंदे मातरम्" किसी संकीर्ण विचारधारा का नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक है। समकालीन भारत में, जब वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद और तकनीकी तेज़ी के कारण राष्ट्रीय मूल्यों पर प्रश्नचिह्न लगते हैं, तब "वंदे मातरम्" की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। यह गीत हमें स्मरण कराता है कि राष्ट्र केवल एक राजनीतिक इकाई नहीं, बल्कि साझा स्मृतियों, बलिदानों और उत्तरदायित्वों का समुच्चय है। आज जब युवा पीढ़ी सुविधाओं और अधिकारों की बात करती है, तब "वंदे मातरम्" उन्हें कर्तव्यों और समर्पण की याद दिलाता है।

शिक्षा संस्थानों, सैन्य समारोहों, राष्ट्रीय पर्वों और सांस्कृतिक आयोजनों में "वंदे मातरम्" का गान केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि भावनात्मक पुनर्संयोजन का माध्यम होना चाहिए। इसका उद्देश्य केवल अतीत का गौरवगान नहीं, बल्कि भविष्य के लिए नैतिक दिशा निर्धारण भी है।

आज जब भारत वैश्विक मंच पर एक सशक्त राष्ट्र के रूप में उभर रहा है चाहे वह विज्ञान हो, अंतरिक्ष हो, अर्थव्यवस्था हो या कूटनीति-तब यह आवश्यक है कि हमारी प्रगति हमारी जड़ों से जुड़ी रहे। "वंदे मातरम्" वही जड़ है, जो हमें हमारी पहचान से जोड़ती है। 150 वर्षों की यह यात्रा हमें यह सिखाती है कि शब्दों में भी क्रांति की शक्ति होती है। एक गीत भी इतिहास की धारा मोड़ सकता है, यदि उसमें सत्य, त्याग और तपस्या की अग्नि समाहित हो। "वंदे मातरम्" उसी अग्नि का प्रतीक है- जो जलाती नहीं, बल्कि प्रकाशित करती है।

अंततः, "वंदे मातरम्" के 150 वर्ष केवल एक गीत की आयु नहीं, बल्कि एक राष्ट्र की चेतना की परिपक्वता का उत्सव हैं। यह गीत अतीत की स्मृति है, वर्तमान की प्रेरणा है और भविष्य का संकल्प है। यह हमें स्मरण कराता है कि भारत केवल हमारा निवास स्थान नहीं, बल्कि हमारी साधना है। जब तक भारतीय हृदय में मातृभूमि के प्रति श्रद्धा, कृतज्ञता और उत्तरदायित्व की भावना जीवित रहेगी, तब तक "वंदे मातरम्" अमर रहेगा।

जैसा कि बंकिमचंद्र ने स्वयं कहा था- "मातृभूमि की आराधना ही सच्ची साधना है।"

150 वर्षों के बाद भी, और आने वाले अनंत वर्षों तक, यह उद्घोष गूँजता रहेगा - वंदे मातरम्।

वंदे मातरम् के 150 वर्ष :

भारत की चेतना का कालजयी उद्घोष

श्वेतांशु
उप प्रबन्धक (मध्यस्थता)
ब्रिज एण्ड रुफ कंपनी इंडिया लिमिटेड

"वंदे मातरम" भारत की आत्मा की वह पुकार है, जो केवल शब्दों में नहीं, बल्कि देशवासियों की चेतना, संघर्ष और संकल्प में निरंतर प्रवाहित होती रही है। "वंदे मातरम' की रचना 1875 में महान साहित्यकार और स्वतंत्रता चिंतक बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने की थी। यह गीत किसी एक युग, आंदोलन या वर्ग तक सीमित नहीं रहा, बल्कि समय के साथ यह भारत की राष्ट्रीय स्मृति और सांस्कृतिक पहचान का अभिन्न अंग बन गया। इसके 150 वर्ष पूर्ण होना केवल एक ऐतिहासिक पड़ाव नहीं, बल्कि राष्ट्र के आत्ममंथन और नवसंकल्प का अवसर है।

यह उद्घोष हमें उस कालखंड की याद दिलाता है, जब भारत राजनीतिक पराधीनता के साथ- साथ आत्मगौरव की लड़ाई भी लड़ रहा था। "वंदे मातरम' ने उस समय भारतवासियों को यह विश्वास दिलाया कि मातृभूमि केवल भूमि का टुकड़ा नहीं, बल्कि माँ के समान पूज्य है। इसी भावना ने सामान्य नागरिकों को भी स्वतंत्रता संग्राम का सक्रिय सहभागी बनाया।

"वंदे मातरम केवल गीत नहीं,
यह त्याग, तपस्या और विश्वास है।
यह हर भारतवासी की श्वास में बसा,
राष्ट्रप्रेम का अमर प्रकाश है।"

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान "वंदे मातरम" ने भय को साहस में और मौन को प्रतिरोध में बदला। जब दमन, लाठी और कारावास का भय था, तब यही उद्घोष लोगों को एकजुट करता था। यह गीत सत्ता के विरुद्ध संघर्ष का नहीं, बल्कि आत्मसम्मान की रक्षा का प्रतीक बन गया। इसी कारण यह नारा सीमाओं, भाषाओं और प्रांतों से ऊपर उठकर राष्ट्रीय एकता का सूत्रधार बना।

स्वतंत्र भारत में भी "वंदे मातरम" की प्रासंगिकता कम नहीं हुई। यह हमें यह स्मरण कराता है कि स्वतंत्रता केवल अधिकारों का उत्सव नहीं, बल्कि कर्तव्यों का निरंतर निर्वहन है। जब हम अपने कार्यस्थल, समाज और राष्ट्र के प्रति ईमानदारी से योगदान देते हैं, तभी इस गीत की भावना सजीव रहती है।

"जहाँ कर्तव्य में राष्ट्र झलके, जहाँ कर्म में ईमान हो,
वंदे मातरम वहाँ जीवित है, जहाँ भारत का सम्मान हो। "

आज के बदलते वैश्विक परिदृश्य में "वंदे मातरम" हमें आत्मनिर्भरता, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व की ओर प्रेरित करता है। यह गीत हमें याद दिलाता है कि राष्ट्र निर्माण केवल सीमाओं की रक्षा से नहीं, बल्कि शिक्षा, उद्योग, प्रशासन और सार्वजनिक जीवन में उत्कृष्टता से होता है। सार्वजनिक उपक्रमों, संस्थानों और कार्यालयों में यह भावना राष्ट्र सेवा को और अधिक अर्थपूर्ण बनाती है।

"न भवनों में, न नारों में, भारत बसता है कर्म में,
वंदे मातरम की सच्ची गूँज, है निष्ठा और धर्म में। "

"वंदे मातरम" के 150 वर्ष हमें अतीत के संघर्ष से शक्ति, वर्तमान से जिम्मेदारी और भविष्य से आशा जोड़ने का संदेश देते हैं। यह उद्घोष हमें सिखाता है, कि राष्ट्रभक्ति प्रदर्शन नहीं, बल्कि सतत साधना है - जो हर पीढ़ी को नई ऊर्जा और दिशा देती रहती है।

वदे मातरम के 150 वर्षः भारत की चेतना का
कालजयी उद्घोष
वदे मातरम

राजभाषा हिंदी के प्रसार में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) की भूमिका

राजेन्द्र कुमार नायक
वरिष्ठ सतर्कता निरीक्षक
हिन्दुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड

भारत के विविध भाषाई परिदृश्य में हिंदी को राजभाषा के रूप में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। यह न केवल संवाद का माध्यम है, बल्कि भारतीय संस्कृति, साहित्य और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक भी है। आधुनिक युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence - AI) एक शक्तिशाली तकनीक के रूप में उभरकर हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार और उसके प्रयोग को नई ऊंचाई प्रदान कर रही है। आइए, इस लेख में हम यह समझते हैं कि AI के उपयोग से हिंदी के प्रसार को किस प्रकार प्रोत्साहित किया जा सकता है।

AI और हिंदी का आपसी संबंध : कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी AI, वह तकनीक है जो मशीनों को मानव मस्तिष्क की तरह सोचने, समझने और निर्णय लेने में सक्षम बनाती है। आज हिंदी भाषा को वैश्विक स्तर पर स्थापित करने और जनता के बीच उसकी पहुँच को बढ़ाने के लिए AI एक अद्वितीय उपकरण साबित हो रहा है।

हिंदी भाषा के प्रसार में AI की भूमिका

1) भाषा अनुवाद और समाकलन: AI आधारित भाषा अनुवादक जैसे Google Translate, Microsoft Translator आदि के माध्यम से हिंदी को अन्य भाषाओं में अनुवाद करना और अन्य भाषाओं को हिंदी में अनुवादित करना आज संभव हो गया है। यह सुविधा विभिन्न भाषाई समुदायों को हिंदी से जोड़ती है।

2) हिंदी साहित्य का डिजिटलीकरण: AI की सहायता से पुराने हिंदी साहित्य, पांडुलिपियों और दस्तावेजों का डिजिटलीकरण किया जा रहा है। इससे हिंदी साहित्य का संरक्षण और उसके प्रचार में सहायता मिलती है।

3) हिंदी में संवादात्मक AI तकनीक: AI आधारित चैटबॉट और वॉयस असिस्टेंट जैसे Alexa, Google Assistant अब हिंदी में संवाद करने में सक्षम हैं। इससे हिंदी भाषी उपयोगकर्ताओं के लिए तकनीक का उपयोग आसान हो गया है।

4) ऑडियो-वीडियो सामग्री निर्माण: टेक्स्ट-टू-स्पीच और ऑडियो-वीडियो निर्माण टूल्स की मदद से हिंदी में गुणवत्तापूर्ण शिक्षाप्रद और मनोरंजक सामग्री तैयार की जा रही है। यह नई पीढ़ी को हिंदी भाषा के प्रति आकर्षित कर रहा है।

5) शिक्षा और प्रशिक्षण में हिंदी: ऑनलाइन शिक्षा प्लेटफ़ॉर्म्स पर हिंदी में पाठ्यक्रम और शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराई जा रही है। AI इन प्लेटफ़ॉर्म्स को संवादात्मक और प्रभावी बनाता है, जिससे हिंदी माध्यम के छात्रों को लाभ होता है।

6) सोशल मीडिया और डिजिटल मार्केटिंग में हिंदी का प्रचार: AI की सहायता से हिंदी में रोचक ग्राफिक्स, पोस्ट और वीडियो तैयार करके सोशल मीडिया पर प्रसारित किए जाते हैं। इससे हिंदी के प्रचार और जागरूकता में वृद्धि होती है।

AI के माध्यम से हिंदी का वैश्वीकरण :

AI की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह भौगोलिक सीमाओं को पार कर वैश्विक स्तर पर प्रभाव डाल सकता है। हिंदी भाषा को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने में AI विभिन्न प्रकार से सहायक सिद्ध हो सकता है:

- हिंदी साहित्य और सांस्कृतिक विरासत का विदेशी भाषाओं में अनुवाद करके उसे अंतरराष्ट्रीय दर्शकों के लिए सुलभ बनाना।
- तकनीकी उपकरणों में हिंदी को एक मानक विकल्प के रूप में स्थापित करना।
- हिंदी भाषा में उपलब्ध तकनीकी समाधानों का वैश्विक बाजार में प्रचार-प्रसार करना।

भविष्य की संभावनाएं और चुनौतियाँ

AI के माध्यम से हिंदी को व्यापक स्तर पर बढ़ावा देने के बावजूद कुछ चुनौतियाँ भी हैं:

1) तकनीकी सीमाएँ: हिंदी के व्याकरण, लहजे और विभिन्न बोलियों को सटीकता से समझने और उनके लिए उपयुक्त टूल्स विकसित करने की आवश्यकता है।

2) सामाजिक स्वीकार्यता: AI आधारित हिंदी टूल्स को सभी वर्गों द्वारा स्वीकार्य और उपयोगी बनाने के लिए जागरूकता कार्यक्रमों की जरूरत है।

3) नैतिकता और सांस्कृतिक संरक्षण: हिंदी की सांस्कृतिक और भाषाई विविधता को बनाए रखना आवश्यक है ताकि AI के माध्यम से किए गए प्रचार में इस मूल भावना का आदर हो।

निष्कर्ष : कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढ़ते उपयोग ने हिंदी भाषा के प्रसार में एक नया युग शुरू किया है। यह न केवल हिंदी को आधुनिक तकनीक से जोड़ रहा है, बल्कि इसे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक नई पहचान भी दे रहा है।

आइए, हम सब मिलकर AI की क्षमता का सदुपयोग करें और अपनी राजभाषा हिंदी को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाएँ। क्योंकि हिंदी सिर्फ एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, परंपरा और आत्मसम्मान का प्रतीक है।

विकसित भारत में राजभाषा की भूमिका

बिनय कुमार शुक्ल
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
कर्मचारी राज्य बीमा निगम

आर्यावर्त, जंबूद्वीप, अजनाभवर्ष आदि नामों से आगे बढ़ते हुए भारत के रूप में परिवर्तित हमारा देश कई वर्षों की गुलामी के बाद से एक बार पुनः अपने अतीत के समान एक बार पुनः विकासशील से विकसित स्वरूप धारण कर रहा है। भारत की यदि बात करें तो आदरणीय श्री जयशंकर प्रसाद जी की रचना का अंश, '"अरुण यह मधुमय देश हमारा, जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा। सरस तामरस गर्भ विभा पर, नाच रही तरुशिखा मनोहर, छिटका जीवन हरियाली पर, मंगल कुंकुम सारा" इसके स्वरूप की सही रूप से बखान करता है। पर इस विकास यात्रा में राष्ट्र की विशिष्ट पहचान तभी स्थापित हो सकती है जब उसकी खुद की भाषा, खुद का ध्वज और खुद की संस्कृति हो। इसमें राष्ट्रभाषा का स्थान बड़ा अहम है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने कहा था, 'कोई भी राष्ट्र बिना राजभाषा के गूंगा है।' चीन, जापान, कोरिया, जर्मनी हर देश की अपनी राष्ट्र भाषा है और अपनी राष्ट्रभाषा पर उन सबको गर्व भी है। भारत के विषय में यदि बात करें तो भारत प्रारंभ से ही विविधताओं का देश रहा है। विश्वपटल का एक विस्तृत भूभाग अखंड भारत का अंश रहा है।

यजुर्वेद 9.22 की सूक्ति है, "वाचं वदध्वं समनस्यतेषाम्" सरल अर्थों में यदि समझने का प्रयास करें तो इसका अर्थ है "वाणी ऐसी हो जो सबको एक सूत्र में बाँधे।"

ऋग्वेद 10.191.2 की एक और सूक्ति का यदि संदर्भ लें जो "संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते॥" – इसे यदि हम वर्तमान परिदृश्य में भाषित करें तो इसका सटीक अर्थ यह लागा सकते हैं कि राज-काज संचालन के लिए साझा भाषा और समान संवाद होना आवश्यक है। यही राजभाषा का गुण भी होना चाहिए।

वर्षों की गुलामी के कारण सत्ता पर बैठे प्रशासकों की भाषा के अनुसार ही देश की राजभाषा भी निर्धारित होती रही है। प्राकृत-संस्कृत-पालि आदि में चलकर मुगल काल में फारसी, फिर अंग्रेजों के काल में अंग्रेजी और फिर उनके जाने के बाद संविधान के अनुसार केंद्र सरकार और राज्य सरकारों की अलग-अलग राजभाषाएँ तथा इनके साथ सह भाषा के रूप में अंग्रेजी का भी जारी रहना देश के विकाम यात्रा में कहीं न कहीं प्रबल सहयोगी रहा है। हालांकि इस मान्यता के आधार पर

अधिकांशतः अपने देश की राजकाज में अंग्रेजी का ही वर्चस्व है तथा यह एक अकाट्य सत्य भी है कि अंग्रेजी का प्रभाव लोक-मानस के नस-नस में कुछ ऐसा समाया है कि जिसे अंग्रेजी न आती हो वह भी खुद को अंग्रेजी का जानकार बताने के प्रयास में भाव अभिव्यक्ति और लेखन में अंग्रेजी को दिन से लगाए ही रखता है। तथापि विकसित भारत में कई ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें राजभाषा की अहम भूमिका है। इसे कुछ इस प्रकार से देखेः

1. भारत की जनसंख्या की कुछ ही प्रतिशत(लगभग 10 प्रतिशत से कम) लोग हैं अंग्रेजी में प्रवीण या वरदहस्त हैं पर अखिल भारतीय स्तर पर लगभग 43 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या हिंदी भाषा बोल और समझ लेती है। ऐसे में रोजगार, शिक्षा, संसकृति आदि के परिदृश्य में देश और इसके नागरिकों को आपस में जोड़ेने में राजभाषा की अहम भूमिका है।
2. अधिकांश जनता अपने राज्य की राजभाषा पढ़ने, बोलने और समझने में सहज है अतः राज्य स्तर पर सबको एक सूत्र में जोड़ने में इसकी अहम भूमिका है।
3. सरकारी योजनाएँ जिन्हें आम आदमी के लिए बनाया जाता है उन्हें यदि राजभाषा में बनाया जाए तो आमजन बिना किसी तकलीफ के उन्हें समझ कर उनका लाभ ले सकता है क्योंकि आज के विकसित भारत में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रसार सबको इस बात के लिए सक्षम कर चुका है।
4. एक राज्य से दूसरे राज्य के लोगों के बीच संवाद का सेतु है और यह सेतु और भी सुदृढ़ भी बन सकता है।

कुछ लोगों का यह तर्क हो सकता है कि भारत की भाषाओं के बदले अंग्रेजी को अपनाना अधिक आसान और सहज-सरल है क्योंकि यह वैश्विक भाषा है, कई देशों में बोली-लिखी और पढ़ी जाती है तथा तकनीकि, चिकित्सा, अंतरिक्ष विज्ञान आदि के क्षेत्र में भारतीय भाषाओं में अध्ययन सामग्री आदि अधिकांश अंग्रेजी में है, भारती भाषाओं में नहीं अतः अंग्रेजी अधिक सुग्राह्य होगी। पर वैज्ञानिक रूप से यह गलत है। यूनेस्को, डॉ. हॉवर्ड गार्डनर, डॉ. विजयराघवन और भारतीय वैज्ञानिक, पीसा (PISA) का आकलन देखें तो यह स्पष्ट है कि भाषाई बुद्धिमत्ता (Linguistic Intelligence) का विकास, विज्ञान की जटिल अवधारणाओं को समझने के लिए मातृभाषा सबसे सरल माध्यम है। यही आगे चलकर राज्य/देश की राजभाषा का एक अंग बनती है।

विकसित भारत में एक ओर जहाँ देश के राजभाषा सर्वोपरि है वहीं इसके मार्ग में कई चुनौतियाँ भी हैं और प पग पर इसे उन चुनौतियों से जूझकर आगे निकालना आवश्यक होगा। कुछ चुनौतियों का विवरण निम्नवत है:-

1. बहुभाषी देश होने के कारण समय-समय पर अलग-अलग भाषा-भाषी अपनी भाषा को सर्वोपरि मानते हुए देश की राजभाषा के प्रति विद्वेषक और विभेदक बातें और कार्य करने का प्रयास प्रारंभ कर सकते हैं जो राजभाषा ही नहीं देश की एकता के लिए भी हानिकारक होगा। ऐसे में इन चुनौतियों के निवारण के लिए एक सार्थक प्रयास करना आवश्यक होगा।
2. सदियों से यह होता आया है कि जो शासन-प्रशासन की भाषा रही है वह जनमानस की भाषा नहीं रही है अतः शासन द्वारा पोषित भाषा राजभाषा का दर्जा तो पा सकती है पर यदि उसे जनमानस की भाषा नहीं बनाया गया तो इसका जनमानस के मन से मिट जाना स्वाभाविक होगा ऐसी परिस्थिति में यदि राजभाषा को रोजगार, शिक्षा और दैनिक प्रयोग के भाषा बनाने का प्रयास नहीं किया गया तो कोई और भाषा बिना कहे हावी होती जाएगी और एक समय ऐसा आएगा जब राजभाषा केवाल कागजों की भाषा बनकर रह जाएगी।

बंकिम चन्द्र के साहित्य में राष्ट्रवाद और स्त्री चेतना

मधुमिता गुहा
व.पर्यवेक्षक (राजभाषा)
एनएचपीसी

बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय भारतीय साहित्य के 'साहित्य सम्राट' और राष्ट्रवाद के पुरोधा माने जाते हैं। वे भारतीय पुनर्जागरण के उन महान स्तंभों में से हैं, जिन्होंने अपनी लेखनी से एक सोए हुए राष्ट्र को जगाने का काम किया। उनका जन्म 27 जून, 1838 को बंगाल के नैहाटी में हुआ था। वह कलकत्ता विश्वविद्यालय के पहले दो स्नातकों में से एक थे और उन्होंने लगभग 32 वर्षों तक ब्रिटिश सरकार में डिप्टी मजिस्ट्रेट के रूप में सेवा की। एक सरकारी अधिकारी होने के बावजूद, उनके भीतर देशभक्ति की ज्वाला प्रबल थी, जो उनके लेखन में स्पष्ट रूप से झलकती है।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उनका सबसे बड़ा योगदान उनका कालजयी गीत 'वंदे मातरम' है, जो उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'आनंदमठ' (1882) से लिया गया है। 'आनंदमठ' को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का गीता माना जाता है। यह 1770 के दशक के बंगाल के भीषण अकाल और 'संन्यासी विद्रोह' की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। इसकी कहानी उन संन्यासियों के इर्द-गिर्द घूमती है जिन्होंने अपना घर-बार त्याग कर मातृभूमि की सेवा का व्रत लिया था। वे खुद को 'संतान' कहते थे और 'भारत माता' को एक देवी के रूप में पूजते थे। उन्होंने 'संतान' सेना की कल्पना की, जो मातृभूमि के लिए सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार थे। इसी उपन्यास के बीच में 'वंदे मातरम' गीत आता है, जिसे भवानंद नाम का पात्र गाता है। दिलचस्प बात यह है कि बंकिम चंद्र ने यह गीत उपन्यास लिखने से कई साल पहले, 1870 के दशक में ही लिख लिया था। उन्होंने इसमें संस्कृत और बंगाली शब्दों का ऐसा मिश्रण किया कि यह सीधे जनमानस के दिल में उतर गया। यह गीत केवल एक स्तुति नहीं, बल्कि ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ एक गर्जना बन गया था।

1896 के कांग्रेस अधिवेशन में रवींद्रनाथ टैगोर ने पहली बार इसे लयबद्ध कर गाया, जिसके बाद यह पूरे देश में फैल गया। लॉर्ड कर्जन के बंगाल विभाजन (1905) के दौरान 'वंदे मातरम' विरोध का सबसे बड़ा नारा बना। ब्रिटिश सरकार इस गीत से इतनी डर गई थी कि उन्होंने इसे सार्वजनिक रूप से गाने पर प्रतिबंध लगा दिया था और इसे गाने वालों को जेल तक भेज दिया जाता था। आज भी यह गीत हमें अपनी मिट्टी से जोड़ता है और उस त्याग की याद दिलाता है जो हमारे पूर्वजों ने देश के लिए किया था। यह बंकिम बाबू की दूरदर्शिता ही थी कि उन्होंने एक गीत के जरिए पूरे भारत को एक सूत्र में पिरो दिया और आगे चलकर यह भारत का राष्ट्रीय गीत बना।

स्वतंत्रता आंदोलन में उनके योगदान को केवल एक गीत तक सीमित नहीं किया जा सकता। बंकिम चंद्र ने 1872 में 'बंगदर्शन' नामक पत्रिका शुरू की। उन्होंने 'बंगदर्शन' पत्रिका के जरिए आधुनिक भारतीय बुद्धिजीवियों की एक पूरी पीढ़ी तैयार की। उन्होंने तर्क दिया कि जब तक हम अपनी भाषा और संस्कृति पर गर्व नहीं करेंगे, तब तक हम राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं कर सकते। उनके लेखन ने अरविंद घोष, बिपिन चंद्र पाल और लाला लाजपत राय जैसे क्रांतिकारियों को प्रेरित किया। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि कलम की ताकत तलवार से कहीं अधिक होती

है। उन्होंने 'भारत माता' की पहली छवि की कल्पना की, जिसने भारतीयों को एक साझा पहचान दी। श्री अरविन्द जैसे क्रांतिकारियों ने उन्हें 'राष्ट्रवाद का जनक' कहा क्योंकि उनके साहित्य ने न केवल मनोरंजन किया, बल्कि एक सोए हुए राष्ट्र को जगाने का काम भी किया। उनके अन्य प्रमुख उपन्यासों जैसे 'देवी चौधुरानी' और 'दुर्गेशनंदिनी' ने भी सांस्कृतिक और राष्ट्रीय चेतना को बढ़ावा दिया।

बंकिम बाबू ने 'देवी चौधुरानी' जैसे उपन्यासों के जरिए नारी शक्ति को राष्ट्रवाद से जोड़ा। उनका मानना था कि समाज का उत्थान महिलाओं की भागीदारी के बिना अधूरा है। उन्होंने अपनी रचनाओं में दिखाया कि कैसे आम नागरिक भी संगठित होकर बड़े साम्राज्य को चुनौती दे सकते हैं। उनके लेखन ने न केवल बंगाल, बल्कि पूरे भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य को प्रभावित किया। उन्होंने धर्म, दर्शन और विज्ञान को भी अपनी लेखनी में जगह दी, जिससे भारतीय युवाओं में तार्किक सोच विकसित हुई। सच तो यह है कि उन्होंने आजादी की लड़ाई शुरू होने से बहुत पहले ही भारतीयों के मन में आजादी का बीज बो दिया था।

बंकिम बाबू के साहित्य में स्त्री का चित्रण अत्यंत सशक्त, गरिमामयी और क्रांतिकारी रहा है। उन्होंने महिलाओं को केवल कोमल या आश्रित पात्रों के रूप में नहीं, बल्कि शक्ति के प्रतीक और राष्ट्र निर्माण की धुरी के रूप में प्रस्तुत किया। उनके उपन्यासों में स्त्री के दो प्रमुख रूप उभर कर आते हैं:

1. **शक्ति और नेतृत्व की प्रतीक:** 'देवी चौधुरानी' में बंकिम बाबू ने प्रफुल्ल (देवी) के माध्यम से दिखाया कि एक साधारण महिला कैसे कठिन प्रशिक्षण और आत्मबल से एक डकैत दल की नेता और समाज की रक्षक बन सकती है। इसी तरह 'आनंदमठ' की शांति (शांति-मणि) पुरुष वेश धारण कर युद्ध के मैदान में उतरती है, जो उस दौर के साहित्य में स्त्री साहस का चरम था।
2. **राष्ट्रवाद और त्याग:** बंकिम बाबू ने 'भारत माता' की जो कल्पना की, वह स्त्री शक्ति का ही सर्वोच्च रूप था। उन्होंने स्त्री को केवल परिवार तक सीमित न रखकर उसे देश के लिए बलिदान देने वाली 'संतान' के रूप में चित्रित किया। उनके लिए स्त्री घर की लक्ष्मी ही नहीं, बल्कि अन्याय के विरुद्ध लड़ने वाली दुर्गा भी थी।

उन्होंने समाज की रूढ़ियों पर भी चोट की। जहाँ एक ओर वे परंपराओं का सम्मान करते थे, वहीं 'विषवृक्ष' और 'कृष्णकांत का वसीयतनामा' जैसे उपन्यासों में उन्होंने विधवाओं के जीवन की जटिलताओं और मानवीय संवेदनाओं को बहुत गहराई से उकेरा। उनके साहित्य में स्त्री केवल एक पात्र नहीं, बल्कि चेतना का स्वर है। बंकिम बाबू के स्त्री चित्रण की एक और विशेष बात यह थी कि उन्होंने महिलाओं को 'रणचंडी' और 'गृहलक्ष्मी' के अद्भुत संगम के रूप में दिखाया। उनके उपन्यासों में स्त्रियाँ केवल महलों तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि वे जंगलों में जाकर युद्ध की रणनीति बनाती थीं और शास्त्र के साथ-साथ शस्त्र का ज्ञान भी रखती थीं। उन्होंने 'मृणालिनी' और 'राजसिंह' जैसे ऐतिहासिक उपन्यासों में दिखाया कि कैसे महिलाओं की बुद्धिमत्ता और साहस ने बड़े-बड़े युद्धों के परिणाम बदल दिए। बंकिम चंद्र ने यह स्थापित किया कि स्त्री का प्रेम उसकी कमजोरी नहीं, बल्कि उसकी सबसे बड़ी ताकत है, जो उसे देशहित के लिए बड़े से बड़ा त्याग करने की प्रेरणा देता है। उनके पात्र आज भी आधुनिक नारीवाद के लिए एक प्रेरणा स्रोत हैं।

बंकिम बाबू के स्त्री पात्रों की एक और खास बात उनकी बौद्धिक स्वतंत्रता थी। 'कपालकुंडला' जैसी रचनाओं में उन्होंने प्रकृति की गोद में पली एक ऐसी निडर स्त्री को दिखाया जो सामाजिक बंधनों से परे है। वे केवल पुरुषों के पीछे चलने वाली छाया नहीं थीं, बल्कि संकट के समय सही रास्ता दिखाने वाली मार्गदर्शक थीं। उनके साहित्य में स्त्री अक्सर एक 'गुरु' की भूमिका में भी नजर आती है। वे प्रेम और मोह से ऊपर उठकर धर्म और कर्तव्य को प्राथमिकता देती हैं। बंकिम चंद्र ने अपनी लेखनी से यह संदेश दिया कि देश की आजादी और सामाजिक प्रगति के लिए महिलाओं का शिक्षित और मानसिक रूप से स्वतंत्र होना अनिवार्य है।

विकसित भारत में राजभाषा की भूमिका

रीना पाण्डेय
प्रबंधक (राजभाषा)
भारतीय खाद्य निगम
क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

विकसित भारत की कल्पना एक ऐसे राष्ट्र की है जहां आर्थिक समृद्धि, सामाजिक न्याय, तकनीकी उन्नति और सांस्कृतिक संरक्षण का सामंजस्य हो। इस संदर्भ में, राजभाषा हिंदी की भूमिका को समझना आवश्यक है, क्योंकि भाषा न केवल संचार का माध्यम है, बल्कि राष्ट्र की एकता, पहचान और विकास का आधार भी है। आज हम एक ऐसे निर्णायक मोड़ पर खड़े हैं जहाँ भारत अपनी स्वतंत्रता के 'अमृत काल' से गुजरते हुए वर्ष 2047 तक एक 'विकसित भारत' बनने का स्वप्न साकार करने की ओर अग्रसर है। जब हम विकास की बात करते हैं, तो वह केवल आर्थिक आंकड़ों या बुनियादी ढांचे तक सीमित नहीं होता, बल्कि उसका मूल आधार 'सांस्कृतिक गौरव' और 'भाषाई सशक्तिकरण' में निहित होता है।

किसी भी राष्ट्र की उन्नति उसकी मौलिक सोच पर निर्भर करती है। इतिहास साक्षी है कि दुनिया के जितने भी विकसित देश हैं-चाहे वह जापान हो, जर्मनी हो या फ्रांस-उन्होंने अपनी मातृभाषा और राजभाषा में ही शिक्षा और नवाचार (Innovation) को बढ़ावा दिया है। विकसित भारत का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए हिंदी और हमारी क्षेत्रीय भाषाओं को ज्ञान-विज्ञान की भाषा बनाना अनिवार्य है। भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है, जहां 22 अनुसूचित भाषाएं और सैकड़ों बोलियां हैं। संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार, हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। विकसित भारत में, जहां हम 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की दिशा में बढ़ रहे हैं, हिंदी प्रशासनिक एकीकरण का प्रमुख साधन बन सकती है। उदाहरणस्वरूप, केंद्र सरकार के दस्तावेजों, नीतियों और योजनाओं को हिंदी में उपलब्ध कराने से ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों के लोगों तक पहुंच आसान हो जाती है। आंकड़ों की बात करें तो, 2011 की जनगणना के अनुसार, हिंदी बोलने वालों की संख्या लगभग 43% है, जो अन्य भाषाओं की तुलना से अधिक है। विकसित भारत में, जैसे-जैसे हम डिजिटल गवर्नेंस की ओर बढ़ते हैं, ई-गवर्नेंस पोर्टल्स (जैसे आधार, उमंग ऐप) में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने से प्रशासनिक दक्षता बढ़ेगी। यदि हम अमेरिका या चीन जैसे विकसित राष्ट्रों को देखें, तो वहां राष्ट्रीय भाषा का मजबूत उपयोग प्रशासन को सुगम बनाता है। हिंदी को मजबूत करके हम भाषाई विभेद को कम कर सकते हैं और एक समावेशी विकास सुनिश्चित कर सकते हैं।

विकसित भारत का अर्थ केवल जीडीपी वृद्धि नहीं, बल्कि सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण भी है। हिंदी, जो संस्कृत से निकली है, हमारी प्राचीन साहित्य, दर्शन और परंपराओं का वाहक है। कबीर, तुलसीदास से लेकर प्रेमचंद और निराला तक, हिंदी साहित्य ने सामाजिक परिवर्तन को

प्रेरित किया है। वैश्वीकरण के युग में, जहां अंग्रेजी का प्रभाव बढ़ रहा है, हिंदी हमारी सांस्कृतिक पहचान को मजबूत रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। उदाहरण के लिए, यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त भारतीय सांस्कृतिक तत्वों (जैसे योग, रामलीला) को हिंदी के माध्यम से विश्व स्तर पर प्रचारित करने से पर्यटन और सॉफ्ट पावर बढ़ेगी। विकसित भारत में, शिक्षा प्रणाली में हिंदी को माध्यम के रूप में अपनाने से विद्यार्थी अपनी जड़ों से जुड़े रहेंगे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी मातृभाषा-आधारित शिक्षा पर जोर देती है, जो हिंदी को बढ़ावा देगी। यदि हम सांस्कृतिक संरक्षण को नजरअंदाज करेंगे, तो विकास अधूरा रहेगा। हिंदी यहां पुल का काम करेगी – परंपरा और आधुनिकता के बीच।

विकसित भारत की यात्रा में डिजिटल इंडिया और मेक इन इंडिया जैसे अभियान प्रमुख हैं। और देखा जाए तो यहां हिंदी की भूमिका क्रांतिकारी हो सकती है। आज, इंटरनेट उपयोगकर्ताओं में 57% से अधिक हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं में सामग्री खोजते हैं। गूगल, फेसबुक जैसे प्लेटफॉर्म हिंदी कंटेंट को बढ़ावा दे रहे हैं, जिससे ई-कॉमर्स, स्टार्टअप और रोजगार के अवसर बढ़ रहे हैं। उदाहरणस्वरूप, हिंदी में एआई-आधारित ऐप्स (जैसे चैटबॉट्स, वॉयस असिस्टेंट) विकसित करने से ग्रामीण उद्यमिता को बल मिलेगा। आर्थिक दृष्टि से, हिंदी मीडिया और मनोरंजन उद्योग (बॉलीवुड, ओटीटी प्लेटफॉर्म्स) पहले से ही अरबों डॉलर का कारोबार कर रहे हैं। विकसित भारत में, हिंदी को वैश्विक भाषा बनाने के लिए अनुवाद तकनीक और भाषाई डेटा सेट्स का विकास आवश्यक है। इससे न केवल आर्थिक समावेश बढ़ेगा, बल्कि भारत को वैश्विक भाषाई बाजार में अग्रणी बना देगा।

निष्कर्षतः विकसित भारत में राजभाषा हिंदी की भूमिका एक बहुआयामी है – यह एकीकरण की कुंजी, सांस्कृतिक ढाल और विकास का इंजन है। हमें हिंदी को मजबूत करने के लिए नीतियां बनानी होंगी, जैसे शिक्षा में इसका अनिवार्य उपयोग, डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर प्रोत्साहन और अनुसंधान में निवेश। यदि हम ऐसा करेंगे, तो विकसित भारत न केवल आर्थिक रूप से मजबूत होगा, बल्कि भाषाई और सांस्कृतिक रूप से भी समृद्ध होगा।

मैं पश्चिम बंगाल क्षेत्र के कोलकाता शहर से सम्पर्क रखती हूँ और "कोलकाता की यह पावन धरा, जो माँ शारदा और स्वामी विवेकानंद के आशीर्वाद से अभिसिंचित है, हमेशा से ही भारतीय चेतना की मशाल रही है। महान मनीषी रवींद्रनाथ टैगोर ने कहा था कि भारतीय भाषाएं आपस में बहनों की तरह हैं। आज जब हम 'विकसित भारत' की बात करते हैं, तो अतीव सुंदर बांग्ला की मिठास और राजभाषा हिंदी की व्यापकता का संगम अनिवार्य है। नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने जिस प्रकार देश को एक सूत्र में पिरोने के लिए 'हिंदुस्तानी' का आह्वान किया था, वही भावना आज हमें कोलकाता से पूरे देश में प्रसारित करनी है। बांग्ला हमें संवेदना और कला देती है, तो हिंदी हमें राष्ट्रीय संवाद का मंच प्रदान करती है और इन दोनों का तालमेल ही एक सशक्त और विकसित भारत का निर्माण करेगा।"

अंत में, मैं यही कहना चाहुंगी कि- "भाषा केवल संवाद का साधन नहीं, वह हमारी संस्कृति की संवाहक और राष्ट्र के विकास की आधारशिला है। हम राजभाषा को केवल संवैधानिक कर्तव्य न मानकर, राष्ट्र निर्माण का गौरव समझें तभी हम विकसीत भारत की कल्पना को कार्यांवैत कर सकते हैं।

राजेश साव
प्रबंधक (राजभाषा)
कोल इण्डिया लिमिटेड

मेरा गाँव

लालिमा भरे आँचल में सुरज की मुस्कान,
ओस की बूँदों से छनी प्रकृति की बाँसुरी सी तान,
हरियाली की चादर ओढ़े, सपनों का जहान,
नदी की मृदुल धारा, बहता निर्मल गान,
पहाड़ों से झाँकती घटा, बांध की सुंदर तान
मिट्टी की महक, आम के बाग़ों की छाँव,
सुनहरे सपनों का बसेरा —यही तो है मेरा गाँव।

धूल भरी पगडंडियों पे चलता है मेरा गाँव,
कोकिला की कूक से जगता है मेरा गाँव।
खेतों-खलिहानों में लहराती हरियाली अपार
शुरु होता है फिर चौपाल पर बैठे
बुजुर्गों की कहानी-संसार,
कहते है सब अपने दर्द अपनी जुबानी,
यही तो है तेरी-मेरी कहानी
गलियों में सरपट दौड़ते, कलरव करते
मस्ती में झुमते--खेलते,
स्कूल को जाते बच्चे महान
यही तो है मेरा गाँव ।

शुरु होता है खेतों में श्रम की पहचान,
जहाँ बसता है, किसानों का अरमान,
हल की धार संग उम्मीदें चमकाती,
सुनहरी धूप जब खेतों पर इठलाती,
फसलों की बालियां मधुर गीत सुनाती,
यही तो है मेरी पहचान, मेरा अभिमान,
यही तो है मेरा गाँव ।

गोधूलि बेला में जब सूरज ढलता,
चिड़ियों का कलरव स्वर्ग सा लगता,
वन से लौटते हैं मवेशी सारे,
पगडंडी से गुज़रते, घर लौटते थकते पांव,
झिंगुर की झनकार, चूल्हे की आग,
आकाश में सितारे टिमटिमाते जब,
धरती भी मानो प्रेम में मुस्काती तब,
यही तो है मेरा गाँव ।

गाँव की गलियों में बसती मिठास,
सीधी सरल बातें, मन का सुखद एहसास।
जो सादगी में सुख पाते,
वे गाँव की मिट्टी में रम जाते।
न कोई छल-कपट, न कोई दिखावा,
हर दिल में है प्रेम और रिश्तों में है ठहराव,
गाँव में जो है अपनापन,
दे न सकी शहर की चकाचौंध उसे धुंधलापन,
यही तो है मेरी पहचान, मेरा अभिमान,
यही तो है मेरा गाँव ।

राजीव शर्मा
हिंदी अधिकारी (संविदात्मक)
बंगाल केमिकल्स एण्ड फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड

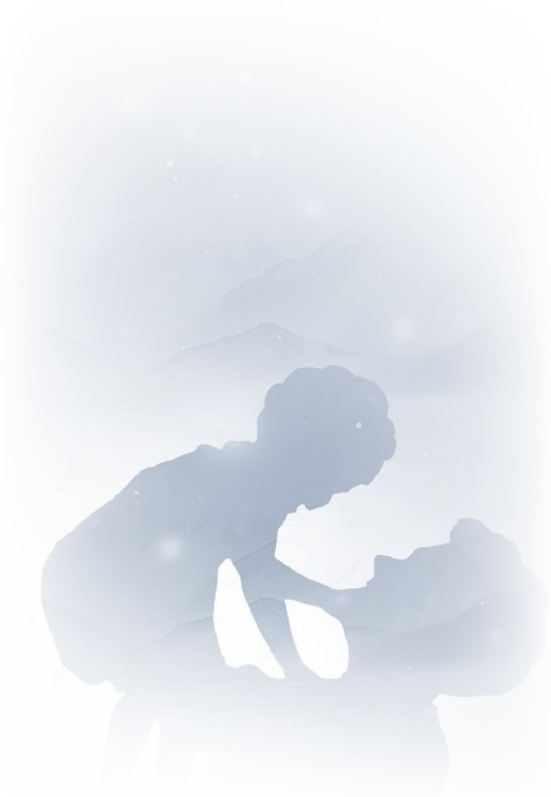

पिता के बिना

पिता की छवि स्मृतियों में बसी है,
उनकी हर सीख, हर हँसी जुड़ी है।
साया उनका नहीं, पर हर पल साथ रहता है,
दिल के हर कोने में उनका प्रेम बसता है।

सूरज की किरणें भी अधूरी सी लगती हैं,
जब उनके हाथों का सहारा याद आता है।
जीवन की राहें कठिन हों या सरल,
उनकी याद हमें आगे बढ़ने की शक्ति देती है।

बचपन के खेल, उनके संग की बातें,
हर खुशी में छुपा उनका प्रेम और मार्गदर्शन।
कभी मार्गदर्शक, कभी मित्र और कभी शिक्षक,
उनकी मौजूदगी हर पल अनुभव होती रहती है।

घर की दीवारें वीरान-सी लगती हैं,
उनकी मुस्कान की कमी हर जगह खलती है।
फिर भी पिता की सीख और संस्कार,
हमारे भीतर आशा और शक्ति जगाते हैं।

संघर्ष की घड़ी में उनकी याद आती है,
हर चुनौती में हमें आगे बढ़ाती है।
सफलता की राह में उनके आदर्श साथ हैं,
उनकी प्रेरणा हमेशा हमारे संग रहती है।

पिता के बिना जीवन सन्नाटा सा लगता है,
पर उनकी यादें जीवन का मार्ग दिखाती हैं।
हर मोड़, हर कदम, हर कठिन राह में,
उनकी सिखाई बातें हमें आगे बढ़ाती हैं।

आदिवासी जब जगने लगा

विजय सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक
भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड

जंगलों से निकली हुंकार, हाहाकार अंग्रेजों में मचने लगा।
गूंज उठी क्रांति की पुकार, आदिवासी जब जगने लगा।।

अलख क्रांति की 'धरती आबा 'ने ऐसी जगाई, नाम आदिवासी गूंजने लगा।
दत मुंडा की रंग लाई, रक्त की बूंद में सपना आजादी का तैरने लगा।

जंगलों से निकली हुंकार, हाहाकार अंग्रेजों में मचने लगा।
गूंज उठी क्रांति की पुकार, आदिवासी जब जगने लगा।
सिद्दों कान्हों की अगुआई में, सन पचपन में प्रेम माँटी का झलकने लगा।
फूलो, झानो ने बचपन में खेली होली, रंग फीका फिरंगियों का पड़ने लगा।

जंगलों से निकली हुंकार, हाहाकार अंग्रेजों में मचने लगा।
गूंज उठी क्रांति की पुकार, आदिवासी जब जगने लगा॥

जल, जंगल और जमीन की लड़ाई में, वार जब तीर-धनुष से होने लगा।
बंगाल, बिहार, ओड़ीशा से उत्तर-दक्खिन तक, जन-जन तब लड़ने लगा।

जंगलों से निकली हुंकार, हाहाकार अंग्रेजों में मचने लगा।
गूंज उठी क्रांति की पुकार, आदिवासी जब जगने लगा॥

पहन 'वीर नारायण' के बलिदान का गहना, गौरव सोनाखान का चमकने लगा।
लेकर हेराका की बागडोर, पहाड़ों की 'रानी गैडिन्ल्यू' का परचम लहराने लगा।

जंगलों से निकली हुंकार, हाहाकार अंग्रेजों में मचने लगा।
गूंज उठी क्रांति की पुकार, आदिवासी जब जगने लगा।

लेकर सीख बंगाल क्रांति से 'अल्लुरी सीताराम राजू' का रम्पा विद्रोह पनपने लगा।
संथाल, भील का तीर जब कमान से निकला, अंग्रेज़ मातृभूमि छोड़ भागने लगा।

जंगलों से निकली हुंकार, हाहाकार अंग्रेजों में मचने लगा।
गूंज उठी क्रांति की पुकार, आदिवासी जब जगने लगा॥

बहने लगी आज़ादी की बयार, सोया पहाड़ अब आदिवासी गाथा सुनाने लगा।
लगने लगी सरजमीं अपनी, हर एक परिदा अब गीत नया गुनगुनाने लगा।

जंगलों से निकली हुंकार, हाहाकार अंग्रेजों में मचने लगा।
गूंज उठी क्रांति की पुकार, आदिवासी जब जगने लगा॥

कुणाल कुमार
उप मंडल अभियंता(प्रशासन-।।)
बीएसएनएल, कोलकाता टेलीफोन्स

वंदे मातरम् के 150 वर्ष

सोने की चिड़िया थी भारतवर्ष, वसुधैव कुटुंबकम् के मंत्र को साकार करता हुआ।
एक ही आंगन तले बसेंगे, रंग बिरंगे फूलों के मेले, यही सपने दिल में भरता हुआ।।

खूब समृद्ध था, अपना प्यारा भारत, जिनके दिलों में सिर्फ, शाश्वत सनातन धड़कता था।
अपनी चिंता किए बगैर, औरों की दशा देख, अपने सीने में दर्द लिए खूब तड़पता था।।

फिर हुई वर्तनियों की चालाकी जब व्यापार के नाम पर हमारे घर, ईस्टइण्डिया कंपनी का जाल बिछाया।
भोले थे हम, भोलेपन का हमने सबूत देकर, वर्तानी व्यवसाय को हवा पानी से, और अधिक सिंचाया।।

हमारे आंगन तले फिरंगियों को पनाह देकर, अपने ही घर पर हम बेघर हुए, दिल ने ये बात जता गया।
भारत भर पर उसी का राज है, अपना ही घर अब गिरवी हुआ, अल्हड़ फिरंगी, एक दिन ये बता गया।।

दिन बीता साल बीती, कई दशक बीते, सोने सी चमकती भारत, गुलामी की जंजीरों में जकड़ी गई।
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई, कोई अछूता ना रहा, मानो हैवानियत के आगे इंसानियत की साख, पकड़ी गई।।

भारतीयों के सीने में, गुलामी की जंजीरों से जकड़े भारत माता की आग, सुलगने लगी।
वर्तानियों के दंश से इतर, विद्रोह की ज्वालामुखी, भारत भर में आग उगलने लगी।।

अमीर-गरीब, बच्चे-बुजुर्ग, मजदूर किसान, सभी सिपाही थे भारत की आजादी के इस महायुद्ध में।
कोई छल से, बल से, कोई फिर अर्थ के सहयोग लिए शामिल, इस रणभूमि, होके फिरंगियों के विरुद्ध में।।

पराधीन भारत के सीने में पलता वो कवियों के दर्दे दिल भी, कलमों की तलवार लिए आगे खड़ा था।
गुलामी की दर्द से निकले आंसु के दवात को, चीखते भारत के कागज में उकेरने, खाके कसम अड़ा था।।

अहिंसा के पुजारी थे हम, यूंही बरबस शहीद होते रहे हमारे सपूत, हम टूटकर बिखरते थे, फिर संभलते थे।
अपने ही आँचल तले अपनों के सांस रुकते देख बिलखकर रोता दिल, आंदोलन के पैंतरे फिर बदलते थे।।

लाला, बाल गंगाधर, सुरेंद्र नाथ, दादा भाई, गोविंद रानाडे सभी थे चिंतित,
कब तक शहीद होते रहेंगे, हमारे सपूत और कितना?

तभी सन् 1875 में, बंकिम बाबू लेकर आए आनंद मठ, जगाने स्वतंत्रता सेनानियों के बीच,
एक नए सुबह की नई चेतना।।

वंदेमातरम् के जयघोष से, मातृभूमि के लिए सोया प्यार भी जाग उठा।
फिरंगियों के गोले से टकराने को, हर घर बच्चों के सीने से आग उठा।।

मातृभूमि के लिए मरकर शहीद होने को, माएं भी तिलक लगा दिया, अपने लाल के ललाट पर।
सीना ठोककर डटे रहे भारत के सपूत सभी, अपना वतन वापस लेने, फिरंगियों के कपाट पर।।

जिधर भी देखो, वंदेमातरम् की ध्वनि से आजादी के मतवाले फिरंगियों पर टूट पड़े।
गुलामी का दंश झेले भारतीयों का आक्रोश, उन गोरों के दिल ओ दिमाग में फुट पड़े।।

अब तक अहिंसक थे हम, पर फिरंगी हमारे आत्म अभिमान को ललकारा था।
वजह यही था कि, हिंसक होकर भी हमने, अपने दुश्मन को फटकारा था।।

आलम ये था कि फिरंगियों ने, 1905 में बंग भंग का क्रूर फरमान दिया।
वंदेमातरम् को अब क्रांतिकारी, राष्ट्रीय आंदोलन के सूचक का सम्मान दिया।।

प्रतिबंधित भी किया वंदेमातरम् को उन वर्तनियों ने, फिर भी देश आजादी की ओर बढ़ने लगी।
मृत्यु से आंख मिचौली करते भारतवीरों के, स्वतंत्रता छीनकर लेने की चाह, परवान चढ़ने लगी।।

वंदेमातरम् की भावना अब, एकत्रित राष्ट्रीय महा संग्राम और बलिदान सी जरूरी बन गई।
भारत भर को स्वतन्त्र घोषित कर, भारत की स्वायत्तता लौटना, अंग्रेजों की मजबूरी बन गई।।

बंकिम बाबू के वंदेमातरम् की, 150 वीं सालगिरह पर हमें थी, भारत के आजादी की ये अमर गाथा सुनानी।
सदा अमर रहे भारत और भारत की स्वतंत्रता, राष्ट्रीय चेतना के गीत की राष्ट्रीय गीत बनने की ये कथा सुहानी।।

माता का आह्वान

जयश्री बंसल
प्रबंधक (समन्वय)
ब्रिज एंड रूफ कंपनी (इंडिया) लिमिटेड

तेरी गोद में सोया मेरा बचपन,
माटी की सौंधी खुशबू में लिपटा,
खेतों की लहरों में झूला झूला,
नदियों की लोरियाँ तूने गाई।

पर जब आँधी आई,
काले बादलों ने ढक लिया आसमान,
तब तेरे सीने से लगकर हमने
होठों पर एक ही नाम रखा - वंदे मातरम्।

तेरी आँखों में आँसू छिपे थे,
जब बेटे तलवारें थामे बढ़े,
शहीदों का रक्त बहा,
धरती लाल हुई -
फिर भी तू मुस्कुराई।

कहा - "उठो मेरे लाल,
मेरी गोद फिर खिलेगी,
फूलों से, विश्वास से।"

वंदे मातरम् - एक प्रार्थना बना,
जो टूटे दिलों को जोड़ गया,
घावों को चुपचाप सी गया।

आज डेढ़ शताब्दी बीत गई,
तेरी झुर्रियाँ गिनूँ तो लगे -
हर रेखा में एक कथा,
हर साँस में एक बलिदान।

पर तेरी आँखों में आज भी
उम्मीद की वही चमक है,
बच्चों को पुकारती-
"आओ, मुझे फिर से सँवारो।

अब यह न नारा है, न गीत,
यह सीने से उठती आह है,
जो पत्थर दिलों को पिघलाए,
आँखों से पश्चाताप बहाए।

माँ, तेरी पुकार सुनकर
काँप उठता है मन -
क्या दिया मैंने तुझे?

आज वादा करता हूँ -
तेरे नाम पर जियूँगा,
तेरे नाम पर काम करूंगा,
हर साँस में गाऊँगा

वंदे मातरम्...
वंदे मातरम्...

वरुण कुमार शर्मा
राजभाषा प्रभारी
भारत हेवी इलेट्रिकल्स लिमिटेड

वंदे मातरम – शताब्दी का शंखनाद

डेढ़ सौ वर्ष नहीं,
डेढ़ सौ ज्वालाएँ जली है,
हर शब्द में क्रांति दहकी,
हर धड़कन में आंधी पली है।

यह गीत नहीं, यह गर्जन है,
वीरता का यह वज्रघोष है,
गुलामी की यह छाती चीरता
स्वतंत्रता का प्रचंड उद्घोष है।

जब 'वंदे मातरम' गूंजा था,
सिंहासन तक काँप उठे थे,
लहू में डूबे उन्न अक्षरों से
भाग्य विधाता जाग उठे थे।

माँ! तेरी माटी के कण-कण में
बलिदानों का इतिहास जगा है,
हर वीर सपूत की शिरा-शिरा में
तेरा अमर विश्वास बसा है।

आज भी जब यह स्वर उठता है
तो अधीरता चूर होती है,
सीमाएँ भी शीश झुकाती हैं,
और नियति मजबूर होती है।

आओ! शपथ ले इस पर्व घड़ी
यह मंत्र शिथिल न पड़ने देंगे
युग बदले या शासन बदले
पर भारत मस्तक न झुकने देंगे।

डेढ़ सौ वर्षों की इस हकार को
शत-शत नमन शत-शत प्रणाम-
हर पुग बोले हर जन बोले-
वंदे मातरम! वंदे मातरम! वंदे मातरम!

सभी के लिए
स्वच्छता और स्वास्थ्य सेवा

फेनियोल
कीटाणुनाशक

450 मि.ली./1 ली./5 ली./20 ली.

व्हाइट टाइगर
फ्लोर क्लीनर

500 मि.ली./1 ली./5 ली.

व्हाइट टाइगर
फ्लोर क्लीनर लेमन एवं नीम

500 मि.ली.

नेफ़्थलीन बॉल्स

100 ग्रा./200 ग्रा./1 कि.ग्रा.

ब्लीचिंग पाउडर

500 ग्राम / 25 कि.ग्रा.

क्लीन टॉयलेट

500 मि.ली.

कैंथरिडिन हेयर ऑयल

यूथेरिया

एक्वा टाइकोटिस

हमारे ओ टी सी उत्पाद

BC PL

बंगाल केमिकल्स एण्ड फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड

(भारत सरकार का एक उपक्रम)

BENGAL CHEMICALS AND PHARMACEUTICALS LIMITED

(A Government of India Enterprise)

CIN NO. : U24299WB1981GOI033489

पंजीकृत कार्यालयः
6, गणेश चन्द्र एवेन्यू,
कोलकाता:700013
दूरभाष सं.:033 22371525/26

वेबसाइटः
www.bengalchemicals.co.in

खुदरा स्टोरः
153, लेनिन सारणी, कोलकाता:700013
44, गोपाल लाल ठाकुर रोड, कोलकाता:700036
502, एस.वी. सावरकर मार्ग, प्रभादेवी, मुंबई:400025

कोल इंडिया
Coal India
A MAHARATNA COMPANY

5 DECADES OF UNEARTHING ENERGY

कोल इंडिया साकार कर रही है करोड़ों सपने...

हमें फॉलो करें

विश्व की सबसे बड़ी कोयला उत्पादक कंपनी

मुद्रण एवं पत्रिका डिजाइन : अंजनी प्रकाशन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, संपर्क : 8820127806, ई-मेल : support@anjaniprakashan.com